ऋग्वेद यजुर्वेद

ओ३म्

स्वाधीनता विशेषांक

पवमान

(मासिक)

मूल्य: ₹ 15

वर्ष : 27 आषाढ़ वि0स0 2072 जुलाई 2015 अंक : 07

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून वजन: 50 ग्राम

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद अथर्ववेद

युवती दिव्य जीवन निर्माण शिविर 27 मई 2015 से 31 मई 2015 तक की झलकियाँ

युवक दिव्य जीवन निर्माण शिविर 4 जून 2015 से 10 जून 2015 तक की झलकियाँ

ओ३म्
पवमान
वर्ष—27 अंक—7
आषाढ़ 2072 विक्रमी जुलाई 2015
सृष्टि संवत् 1,96,08,53,115 दयानन्दाब्द : 190

★
—: संरक्षक :—
स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती
★
—: अध्यक्ष :—
श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री
मो. : 09810033799
★
—: सचिव :—
प्रेम प्रकाश शर्मा
मो. : 9412051586
★
—: आद्य सम्पादक :—
स्व0 श्री देवदत्त बाली
★
—: मुख्य सम्पादक :—
कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री
अवैतनिक
मो. : 08755696028
★
—: सम्पादक मण्डल :—
अवैतनिक
आचार्य आशीष दर्शनाचार्य
मनमोहन कुमार आर्य
★

—: कार्यालय :—
वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,
तपोवन मार्ग, देहरादून—248008
दूरभाष : 0135—2787001

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com
Web-www.vaidicsadhanashramdehradun

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	3
भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में.....	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	4
महर्षि दयानन्द, वेद प्रचार......	मनमोहन कुमार आर्य	8
काकोरी कांड के प्रणेता चन्द्रशेखर...	रमेश चन्द्र मित्तल	13
भारत की प्रथम स्वातन्त्र्य समर....	आर्य रवीन्द्र कुमार	14
परमात्मा पर विश्वास	पंडित शिव शर्मा उपदेशक	19
पंचमहायज्ञ	महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज	21
बुद्धि सर्वश्रेष्ठ है		24
स्वस्थ जीवन के लिये धारण.....	श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार	27
वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर.....		29
दानदाताओं की सूची		30
पवमान पत्रिका......... अवशेष शुल्क		31

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. "वैदिक साधन आश्रम"	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहरादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1. कलर्ड फुल पेज — रु. 5000/— प्रति माह
2. ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज — रु. 2000/— प्रति माह
3. ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज — रु. 1000/— प्रति माह

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

स्वतन्त्रता की महिमा

परमेश्वर ने समस्त मनुष्यों को कर्म करने की स्वतन्त्रता प्रदान की है परन्तु फल उस परमपिता की शासन व्यवस्था के अधीन है। स्वतंत्रता सभी को प्रिय होती है। कोई भी जीव पराधीनता में सुखी नहीं रह सकता है। भारत में प्राचीन काल में अनेक गणपद थे जिनमें स्मृतियों के आधार पर शासन व न्याय व्यवस्था संचालित की जाती थी। कालान्तर में शासकों की निरंकुशता आदि कारणों से इस व्यवस्था में कुछ गिरावट आई और जनता के मौलिक अधिकारों का हनन होने लगा। राष्ट्र पराधीनता की ओर अग्रसर होने लगा। महर्षि द्वारा अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में पराधीनता के मुख्य कारणों पर प्रकाश डाला गया है। उनके अनुसार 'विदेशियों के आर्यावर्त्त में राज्य के होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना–पढ़ाना वा बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्याभाषणादि कुलक्षण, वेदविद्या का अप्रचार आदि कुकर्म हैं। जब आपस में भाई–भाई लड़ते हैं तभी तीसरा आकर पंच बन बैठता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती का सम्पूर्ण जीवन व कृतित्व आध्यत्मिकता और राष्ट्रीयता से परिपूर्ण था। राष्ट्रप्रेम उनके लिए सर्वोपरि था। उनका विचार था कि पराधीन व्यक्ति समाज और राष्ट्र के लिए अधोगति का कारण बनता है। महर्षि दयानन्द भारतीय स्वातंत्र्य की कल्पना करने वाले पहले व्यक्ति थे। उनसे प्रभावित होकर अनेक युवा स्वातन्त्र्य संग्राम में कूद पड़े थे और इनमें से कई ने इस संग्राम में अपने प्राणों की आहुति दी थी। इन शहीदों में स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, चन्द्रशेखर 'आजाद', भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल, श्यामजी कृष्ण वर्मा, वीर सावरकर, आदि प्रमुख थे। स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर हम सभी शहीदों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

हम लोग प्रत्येक वर्ष स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त को राष्ट्रीय ध्वज फहराकर और उत्साहवर्द्धक भाषण आदि कार्य करके इस पर्व को मनाने की एक खानापूरी कर लेते हैं। यदि हमें अनेक कष्टों और संघर्षों के बाद मिली स्वतन्त्रता की रक्षा करते हुए राष्ट्र को सुदृढ़ व शक्तिशाली बनाना है तो हमें, इस अवसर पर संकल्प लेना होगा कि आपसी भेदभाव और वैमनस्यता को दूर कर राष्ट्र की एकता को अक्षुण्य बनाएंगे। आर्यसमाज के दसवें नियम में कहा गया है कि सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें। पातंजल योगदर्शन में पांच यम–अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह दिए गए हैं। ये सामाजिक कर्त्तव्य हैं जिनके पालन करने में हमें सदैव परतन्त्र रहना चाहिए। पांच नियम हैं–शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर–प्रणिधान। इन व्यक्तिगत नियमों को पालन करने में, सब स्वतन्त्र हैं। यदि हम आर्यसमाज के सभी नियमों, विशेष करके दसवें नियम का पालन दृढ़ता से करते रहेंगे तो समाज और स्वतन्त्रता की नींव को अधिक मजबूत कर सकेंगे। आप सभी को इस पावन पर्व की शुभकामनाएं।

पुनश्चः– हमारी पत्रिका का अंक डाक–व्यवस्था की परिस्थितियों के चलते, कुछ सुधि पाठकों तक, अगले माह में ही पहुंच पाता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हम यह स्वाधीनता–विशेषांक, माह जुलाई के अंक में ही प्रस्तुत कर रहे हैं और भविष्य में भी विशेषांक, इसी प्रकार अग्रिम रूप से आपकी सेवा में प्रस्तुत करने का प्रयास रहेगा।

कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

❀ वेदामृत ❀

वह है

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरमुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम्।
सो अर्यःपुष्टीर्विज इवा मिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः।।

(ऋ0 2/12/5)

शब्दार्थ– **(**यं) जिस प्रकार ईश्वर के विषय में (कुह सः इति) वह कहाँ है? इस प्रकार (पृच्छन्ति स्म) पूछते हैं (उत) और कुछ लोग (ईम्) इसको (घोरम्) घोरकर्मा, दण्डदाता (आहुः) कहते हैं, कुछ लोग (एनम्) इसके विषय में (एषः) यह (न अस्ति) नहीं है (इति) ऐसा कहते हैं। (सः) वह (अर्यः) संसार का स्वामी (पुष्टीः) ऐश्वर्यों और समृद्धियों को (विज इव) कँपाकर (आ मिनाति) नष्ट कर देता है। (जनास) हे मनुष्यों! (अस्मै) उसके लिए (श्रत् धत्त) श्रद्धा करो (सः इन्द्रः) वह ऐश्वर्यशाली परमात्मा है।

भावार्थ– संसार में ईश्वर के विषय में लोगों की भिन्न–भिन्न धारणाएँ हैं। कुछ लोग कहते हैं ईश्वर यदि है तो दीखता क्यों नहीं?

कुछ लोगों का विचार है कि ईश्वर घोरकर्मा है, वह दण्डदाता है, वह प्राणियों को रुलाता है।

कुछ लोग घोषणापूर्वक यह कह दिया करते हैं कि इस संसार का निर्माता कोई नहीं है। इसका नियन्ता और पालक कोई नहीं है।

इस मन्त्र में ईश्वर–सिद्धि के लिए दो युक्तियाँ दी हैं। प्रथम है स्वाभाविक इच्छा। प्रत्येक व्यक्ति ईश्वर के विषय में जानना चाहता है, अतः ईश्वर है। दूसरी है संसार में होने वाली आकस्मिक घटनाएँ जो मनुष्यों के जीवन में प्रायः घटती रहती हैं। बाह्य दृष्टि से उनका कोई कारण दिखाई नहीं देता परन्तु कोई कारण तो होना ही चाहिए। वह कारण परमेश्वर ही हो सकता है।

सांसारिक ऐश्वर्यों को क्षणभर में मिट्टी में मिला देने वाली कोई सत्ता है। मनुष्यों! उसमें श्रद्धा धारण करो।

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्यसमाज की भूमिका

—कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में कहा है कि विदेशियों का राज्य चाहे वह माता–पिता के समान न्याय और दया से युक्त क्यों न हो, कभी हितकारी नहीं हो सकता है। सन 1874 में लिखे गये ग्रन्थ, आर्याभिविनय में महर्षि दयानन्द ने अपनी भावनाएं इस प्रकार प्रकट कीं थीं–''अन्यदेशवासी राजा हमारे देश में कभी न हों तथा हम लोग पराधीन कभी न हों।'' उस समय तक स्वराज्य का विचार किसी भी राजनेता या विद्वान् के मन में नहीं आया था। कांग्रेस के भीष्म पितामह दादाभाई नौरोजी ने सर्वप्रथम 1906 में ''स्वराज्य'' शब्द का उच्चारण किया था और होमरूल आन्दोलन के दिनों में इस शब्द का खुलकर प्रयोग होने लगा था। लोकमान्य तिलक ने, कांग्रेस के 1916 में, लखनऊ के अधिवेशन में, ''स्वराज्य के जन्मसिद्ध अधिकार''' की घोषणा की और 1928 के लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने के लक्ष्य की घोषणा की थी परन्तु महर्षि दयानन्द ने इससे कई वर्ष पूर्व ही स्वराज्य के विचार को प्रचारित किया था। भारत में स्वाधीनता प्राप्ति के लिए किये गये आन्दोलन में आर्यसमाज की अग्रणी भूमिका रही है। उन्होंने अपने अनुयायियों और जनमानस में, सर्वप्रथम स्वधर्म, स्वदेश, स्वसाहित्य, स्वसंस्कृति और स्वभाषा की भावनायें कूट–कूटकर भरी थीं।

१– **स्वधर्म**–महर्षि दयानन्द की स्वधर्म पर अटूट श्रद्धा थी। उनके अनुसार भारत का प्राचीनतम् धर्म, वैदक धर्म है। यह पूर्णरूप से आस्तिक भाव लिए हुए एकेश्वरवादी है। वैदिक धर्म के अनुसार परमेश्वर किसी मठ, मन्दिर, गिरजाघर या गुरद्वारे में बन्द नहीं है, अपितु वह सर्वत्र विद्यमान है। यह मानवतावादी धर्म है।

२– **स्वदेश**–प्रेम, स्वदेशी और स्वदेशाभिमान–महर्षि के हृदय में मातृभूमि का सर्वोपरि स्थान था और देश प्रेम की भावना उनमें कूट–कूट कर भरी हुई थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती की धमनियों में राष्ट्रीयता और देश प्रेम की भावना इस प्रकार प्रवाहित हो रही थी कि उन्होंने अपने विचारों का, अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश और अन्य साहित्य में अनेक स्थानों पर उल्लेख किया है। उनका कहना था कि जो अपने देश से प्रेम नहीं करता वह स्वतन्त्र रहने की इच्छा भी कभी नहीं कर सकता है।

३– **स्वसाहित्य**–महर्षि की स्वसाहित्य में अटूट आस्था थी। वे वैदिक वाङ्मय के अंगभूत ग्रंथों को ही साहित्य का मूलाधार मानते थे। इन्हें वे आर्ष ग्रंथ कहते थे। उनके अनुसार वेद, वेदांग, स्मृति, दर्शन, रामायण और महाभारत हमारे स्वसाहित्य के अनमोल रत्न हैं। उन्होने वेदों का पुनरोद्धार करते हुए, जनमानस की समझ में आने वाली भाषा, हिन्दी में अनुवाद किया। महर्षि को अपने देश के साहित्य पर गर्व था और उन्होंने अपने देशवासियों को स्वसाहित्य की ओर आकृष्ट कर, उन्हें स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी थी।

४– **स्वसंस्कृति**–संस्कृति शब्द का बहुत व्यापक अर्थ है। संस्कृति मानव के सम्पूर्ण व्यवहार की परिचायक होती है। इसमें हमारी जीवन–चर्या और विचार पद्धति में कला, साहित्य, भाषा, धर्म, मनोरंजन और विश्वास आदि प्रतिबिम्बित होते हैं। स्वामी जी प्राचीन आदर्शों के उपासक थे परन्तु वे अंधविश्वासों, रूढ़ियों और पाखण्डों को भारतीय संस्कृति का अंग नही मानते थे।

५— **स्वभाषा की स्वाधीनता आन्दोलन में भूमिका**—दयानन्द पहले भारतीय विचारक थे जिन्होंने यह अनुभव किया कि भारत को एक राष्ट्रभाषा की आवश्यकता है। इसलिए मातृभाषा गुजराती होते हुए भी उन्होंने सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कारविधि आदि सभी पुस्तकें हिन्दी में लिखकर हिन्दी को मातृभाषा के रूप में विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

हमने उपरोक्त रूप से महर्षि को प्रिय, पांच स्वकारों का संक्षिप्त परिचय दिया है। उक्त बिन्दुओं के अतिरिक्त भी महर्षि की कई अन्य मान्यताओं ने समस्त देशवासियों के मन में देश प्रेम की भावनाओं को विकसित किया और विदेशी शासन से मुक्त होकर स्वाधीनता प्राप्ति के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया था। कुछ मुख्य मान्यताएं निम्न प्रकार हैं—

१— **स्वशासन**— राष्ट्रीयता का एक महत्वपूर्ण पहलू स्वशासन का सिद्धान्त माना जाता है। स्वदेशाभिमान के बिना हम अपनी अस्मिता की रक्षा नहीं कर सकते हैं। राष्ट्रीयता का एक महत्वपूर्ण पहलू स्वशासन का सिद्धान्त माना जाता है।

२— **वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना**— अंग्रेजों के शासनकाल के समय देश में जाति और धर्म के आधार पर समाज में आपस में फूट थी। महर्षि की वसुधैव कुटुम्बकम् की विचारधारा का समाज के सभी वर्गों पर अत्यंत गहरा प्रभाव पड़ा। मुसलिम, ईसाई, जैन और पारसी आदि सभी सम्प्रदायों के लोग स्वाधीनता की मशाल को थामने हेतु आगे आए और राष्ट्रीय एकता की भावना का जन—जन में प्रचार होने से स्वाधीनता आन्दोलन पहले की अपेक्षाकृत अत्यधिक एकजुट और मजबूत हुआ।

३— **नारी और दलित जागरण के साथ समानता का भाव**—तत्कालीन समाज में नारियों और दलितों की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। मध्यकाल से एक भ्रांतिमय उक्ति, "स्त्रीशूद्रो नाधीयताम्" समाज में प्रचलित थी। महर्षि ने इसका घोर विरोध किया और कहा कि विद्या प्राप्ति और वेद पढ़ने का अधिकार मनुष्यमात्र को है। उन्होंने सभी के लिए अनिवार्य शिक्षा पर बल दिया। उनके इन विचारों से प्रभावित होकर कन्याओं के लिए शिक्षा के द्वार खुल गए। महर्षि ने अपने जीवनकाल में ही दो कन्या पाठशालाओं की नींव रख दी थी। इनमें से एक कन्या महाविद्यालय की स्थापना फीरोजपुर के अनाथालय के साथ ही की गई थी। दूसरी कन्या पाठशाला की स्थापना मेरठ में की गई थी। इसके बाद कन्याओं को शिक्षा देने का उत्साह सम्पूर्ण देश में फैल गया। नारी शक्ति के जागरण के फलस्वरूप माता रत्ना देवी, माता राम सखी और दुर्गा भाभी आदि अनेक महिलाओं ने स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान देकर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसी प्रकार दलित वर्ग के लोगों में भी शैक्षिक विकास हुआ। उनमें से अनेक व्यक्तिओं ने राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में भाग लेकर अपना अमूल्य योगदान दिया था।

४— **राष्ट्रीय एकात्मता**— महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे सम्मुलास में राजधर्म का प्रतिपादन किया है। वैदिक अवधारणा के अनुसार समस्त मानव—समाज व सम्पूर्ण राष्ट्र पुरुष रूप है। राष्ट्र के सब मानवों का सम्मिलित रूप एक ही पुरुष है। ये सब 'राष्ट्र पुरुष शरीर' के विभिन्न अंग हैं। ये सब मिलकर ही राष्ट्र कहलाते हैं। जैसे शरीर के अनेक अवयव अलग—अलग होने पर भी समस्त शरीर की मिलकर एक संवेदना होती है, एकात्मता होती है, वैसे ही राष्ट्र में एकात्मता होनी चाहिए। इसी

आधार पर वेद की राष्ट्रीय शासन–व्यवस्था टिकी हुई है। वेदों पर आधारित उनके इस क्रांतिकारी विचार से भारत की एक राष्ट्र के रूप में कल्पना को एक दृढ़ आधार मिला और विभिन्न राज्य व रजवाड़ों के लोगों को भारत की मुख्य धारा से जोड़ने में सहायता मिली जिससे न केवल स्वाधीनता संग्राम को बल मिला अपितु स्वतन्त्रता की प्राप्ति के बाद सभी रियासतों के भारत–राष्ट्र में विलय करने में भी सहायता मिली।

५– **स्वदेशी शिक्षा**– महर्षि दयानन्द ने स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग के समान ही स्वदेशी शिक्षा पर भी बल दिया था जिसके फलस्वरूप आर्यसमाज ने बहुत से शिक्षणालयों की स्थापना की। इन शिक्षण–संस्थाओं का स्वाधीनता संग्राम में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। डी.ए.वी. संस्थाओं, गुरुकुल कांगड़ी और अन्य गुरुकुलों में राष्ट्रीयता का वातावरण प्रादुर्भूत हुआ जिसके फलस्वरूप भारत में सुशिक्षित लोगों का एक ऐसा वर्ग उत्पन्न हुआ जो देशभक्ति और राष्ट्रीयता की भावनाओं से ओतप्रोत था।

महर्षि के विचारों से प्रभावित अनेक नौजवान स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े। ये सभी आर्यसमाज के सक्रिय सदस्य थे परन्तु उस समय की परिस्थितियों की विवशता के रहते हुए, आर्यसमाज, एक संस्था के रूप में स्वयं स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय भूमिका नहीं निभा सकता था। ऐसा करने पर उसे राजद्रोही समझ कर प्रतिबन्धित किया जा सकता था जिससे उसके वेद प्रचार और धार्मिक कुरीतियों और अंधविश्वासों के विरुद्ध किए जाने वाले अभियानों में रुकावट आ सकती थी। जब आर्यसमाज पर शंका की जाने लगी तो स्वामी श्रद्धानन्द ने यह तर्क दिया कि यदि कतिपय आर्यसमाजी अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध संघर्ष में तत्पर हैं, तो उसके कारण आर्यसमाज को राजद्रोही नहीं समझा जा सकता था। यह स्थिति प्रथम महायुद्ध के दौरान सन् 1914–18 ई० तक रही। सन 1919 में भारत के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास का नया अध्याय आरम्भ हुआ। ब्रिटिश राजनीतिज्ञों द्वारा प्रथम विश्वयुद्ध के अवसर पर लोकतंत्र, राष्ट्रीयता और स्व–भाग्य निर्णय का समर्थन करने वाले सिद्धान्तों की घोषणाएं की गई थी। उनके द्वारा भारतीय जनता को आश्वासन दिया गया था कि युद्ध के समाप्त होते ही वे भारत में उत्तरदायी शासन दिए जाने के सम्बन्ध में कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेंगे परन्तु सन् 1919 में गवर्नमैंट ऑफ इण्डिया एक्ट द्वारा जिन शासन–सुधारों की घोषणा की गई, उनसे जनता संतुष्ट नहीं हुई। रॉलेट एक्ट के दमनकारी कानून का विरोध करने हेतु स्वामी श्रद्धानन्द ने तार द्वारा अपना सहयोग कांग्रेस को देने की सहमति प्रदान की थी। दिल्ली सत्याग्रह के संचालन के लिए एक कमेटी गठित की गई। इसके एक तिहाई से अधिक सदस्य आर्य सभासद थे। दिसम्बर सन् 1919 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन अमृतसर में हुआ जिसकी स्वागतकारिणी समिति के अध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द चुने गए थे। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने अछूतोद्धार पर बहुत जोर दिया। उनका कहना था कि देश की स्वतन्त्रता के लिए उन बुराइयों को दूर करना आवश्यक है, जिनके कारण देश गुलाम बना था। उन्होंने अस्पृश्यता निवारण को कांग्रेस के कार्यक्रम में सम्मिलित कराया। उनका हिन्दी में भाषण देना भी एक क्रांतिकारी कदम था। सितम्बर 1920 में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन कलकत्ता में हुआ जिसमें गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव

संसार में बार–बार जन्म लेना बुद्धिमता नहीं है, क्योंकि संसार में अनेक दुःख भोगने पड़ते हैं। मोक्ष में रहना बुद्धिमत्ता है, क्योंकि मोक्ष में केवल सुख ही मिलता है, दुःख बिल्कुल नहीं।

रखा था। इस आन्दोलन ने व्यापक रुप धारण किया। आन्दोलन चलाने के लिए धन की आवश्यकता थी। महात्मा गांधी ने इसके लिए तिलक फण्ड बनाकर धनराशि एकत्र करने की अपील की थी। गुरुकुल कांगड़ी के विद्यार्थी 'तिलक स्वराज्य फण्ड' एकत्र करने के लिए निकल पड़े थे। स्वामी श्रद्धानन्द ने भी इस असहयोग आन्दोलन में उत्साहपूर्वक भाग लिया। महात्मा गांधी के इस असहयोग आन्दोलन को श्रद्धानन्द और अन्य आर्य नेता, महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित मार्ग के अनुरुप ही मानते थे इसलिए वे बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए और उन्होंने अपनी पूर्ण शक्ति लगा दी थी।

क्रांतिकारी आन्दोलन में आर्यसमाजियों का योगदान–

महर्षि के परम शिष्य श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा को क्रांतिकारी आन्दोलन का जनक माना जाता है। सन् 1905 में विदेशों में स्वतन्त्रता आन्दोलन का प्रारम्भ करने वाले श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा ने 'इण्डियन होमरूल सोसाइटी' की स्थापना की। उसके बाद उन्होंने 'इण्डियन सोसलिस्ट' नामक पत्र का प्रकाशन करना प्रारम्भ किया था। सन् 1916 में लाला लाजपतराय आदि आर्य देशभक्तों ने अमेरिका में भारत की स्वतन्त्रता के लिए एक अनुकूल वातावरण बनाने के लिए 'इण्डियन होमरूल लीग' की स्थापना की और अमेरिका के जनमानस व सरकार से भारत की स्वतन्त्रता के लिए समर्थन प्राप्त करने के अनेक प्रयास किए गए। क्रांति के इतिहास के अध्ययन करते समय, वीर सावरकर का नाम अग्रणी रूप से लिया जाता है। उन्होंने बी.ए. पास करने के बाद लन्दन जाकर, वहां से वकालत करने का निर्णय लिया। 9 जून सन् 1906 को वे लन्दन के लिए रवाना हुए और वहां पहुंच कर महर्षि दयानन्द के शिष्य व क्रान्तिकारियों के आद्यगुरू श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा के इण्डिया हाउस में निवास करने लगे, जहां पहले से ही कई क्रान्तिकारी युवक रहा करते थे। यहां आकर आपने पहला काम अंग्रेजों द्वारा लिखित भारत के इतिहास को पढ़ा। वे इतिहास लेखन के इस पक्षपातपूर्ण तरीके से अत्यंत अप्रसन्न हुए। सन् 1909 में 11 जुलाई को लन्दन के जहांगीर हाल में एक बैठक में भारतीयों पर अत्याचारों के दोषी कर्जन वायली उपस्थित थे। वीर सावरकार और मदनलाल धींगड़ा आदि कई क्रान्तिकारी वहां पहुंच गये। मदन लाल धींगड़ा ने पिस्तौल की गोली से कर्जन वायली को वहीं ढेर कर दिया। एक अंग्रेज ने धींगड़ा को पकड़ने की कोशिश की तो उसे भी पिस्तौल की गोली से उड़ा दिया गया। इस घटना के परिणामस्वरूप श्री धींगड़ा को 16 अगस्त सन् 1909 को लन्दन में फांसी दे दी गई। यह सब आर्यसमाज के क्रांतिकारियों के संघर्षों का ही परिणाम था कि अंग्रेज सरकार भयभीत हो उठी थी। क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग लेने वालों में श्री सोहनलाल पाठक सदा अमर रहेंगे। श्री खुशीराम आर्य का नाम सदा आदर से लिया जायेगा जो एक–एक गोली खाते हुए 'भारत माता की जय' और 'वंदे मातरम्' के नारे लगाते रहे थे। स्वाधीनता की बलि वेदी पर लाला लाजपतराय के प्राणोत्सर्ग को सदा याद किया जाएगा। इसके अतिरिक्त अनेक आर्यवीर सेनानियों ने अपने प्राणों की बलि दी जिनका स्थानाभाव के कारण इस छोटे से लेख में हम वर्णन नहीं कर पाए हैं। भारत को अन्ततोगत्वा 15 अगस्त 1947 को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में महर्षि दयानन्द के लाखों अनुयायियों ने तन, मन, धन और अपना जीवन तक निछावर कर दिया इनमें लाला लाजपतराय, एम.जी. रानाडे, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, श्यामजी कृष्ण वर्मा, इन्द्र वाचस्पति, भगवतीचरण, भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह, गेंदालाल दीक्षित, मदनलाल धींगड़ा, खुशी राम आर्य, सोहन लाल पाठक, भाई बालमुकुन्द, मुरलीधर, देशबन्धु गुप्ता आदि प्रमुख हैं। इन समस्त स्वतन्त्रता सेनानियों के बलिदान के लिए राष्ट्र सदा उनका ऋणी रहेगा।

सौजन्य से– **APEX ENGINEERS**
Gurgaon (Haryana), Mob. : 09810481720

ओ३म्

––स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त के अवसर पर––

'महर्षि दयानन्द, वेद प्रचार और देश को स्वतन्त्रता की प्राप्ति'

– मनमोहन कुमार आर्य

15 अगस्त का दिन देश का स्वतन्त्रता दिवस है। सन् 1947 में इसी दिन भारत को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति व स्वतन्त्रता मिली थी। यद्यपि यह स्वतन्त्रता है परन्तु हमें यह भी याद रखना चाहिये कि इस दिन से एक दिन पहले 14 अगस्त, 1947 को भारत का 1/3 से अधिक भाग हमसे अलग कर पाकिस्तान बना दिया गया था जिसका कारण हिन्दू व मुस्लिम दो अलग–अलग कौमों का होना था। इस बात को स्वीकार किया गया था। 15 अगस्त, 1947 को जो स्वतन्त्रता हमें व हमारे वर्तमान देश भारत को मिली **उसमें महर्षि दयानन्द और आर्य समाज का क्या योगदान था,** इसकी संक्षिप्त चर्चा हम इस लेख में कर रहे हैं। इसके लिए हमें पराधीनता की पृष्ठ भूमि में जाना होगा। महर्षि दयानन्द का कहना व मानना है और यह प्रमाणिक भी है कि **सृष्टि के आरम्भ काल से महाभारत काल तक के लगभग 1 अरब 96 करोड 08 लाख 48 हजार वर्षों तक आर्यों का समस्त भूमण्डल पर एकमात्र चक्रवर्ती राज्य रहा है।** इसका अर्थ है कि आर्यावर्त्त के अतिरिक्त अन्य देशों में वहां उत्पन्न हुए मनुष्यों में जो राजा होते थे वह सभी भारत वा आर्यावर्त्त के अधीन होते थे और नियमानुसार भारत को कर आदि देते थे। इस कर के बदले में भारत उनकी शिक्षा व अन्य आवश्यकताओं में अपना योगदान देता था जैसा कि किसी परिवार में बड़ा धार्मिक वैदिक प्रवृत्ति का भाई अपने छोटे भाईयों व उनके परिवार के प्रति करता है। मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र और महाभारत में युधिष्ठिर जी के उदाहरण हमारे सामने हैं। यह बताना भी प्रासंगिक है कि चक्रवर्ती राज्य का अर्थ किसी देश व राजा को गुलाम बनाना नहीं है अपितु इसका अर्थ केवल वहां वैदिक मान्यताओं के अनुसार धर्म का राज्य जिसमें सत्य, न्याय, निष्पक्षता, सबकी समृद्धि, सुख व कल्याण हो, ऐसी व्यवस्था के लिए सहयोग किया जाता था। इसका यह भी एक कारण था कि वहां कोई राजा निरंकुश होकर अपनी प्रजा व पड़ोसी राज्यों से शत्रुता और युद्ध आदि न करे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह चक्रवर्ती राज्य होता था। सभी देशों में वहां के मूल निवासी ही राज्य करते थे। भारत के चक्रवर्ती सम्राट की ओर से राज्य संचालन में उनको सहयोग दिया जाता था और उनसे कर लिया जाता था। निर्धन व निर्बल देशों की सहायता भी उस कर से प्राप्त राशि से अवश्य की जाती होगी, ऐसा अनुमान वेदों व वैदिक साहित्य का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है।

महाभारत काल तक आर्यों का राज्य निष्कटंक चलता रहा। महाभारत काल में राज–परिवार में परस्पर मतभेद हुए जिसमें एक पक्ष धर्म पर था तो दूसरा अधर्म पर। अधर्म के पक्ष ने स्वार्थ, शक्ति व छल से काम लिया जिसका परिणाम उस समय का महायुद्ध हुआ जिसमें लाखों लोग मारे गये और जिसके परिणाम से जो अव्यवस्था उत्पन्न हुई वह नियंत्रित होने के स्थान पर बढ़ती गई। यह हमारा सौभाग्य है कि महायुद्ध का प्रमाणिक दस्तावेज **'महाभारत ग्रन्थ'** हमारे पास विद्यमान है। इस महायुद्ध के परिणामस्वरूप वैदिक ज्ञान का लोप हो गया और समाज में अज्ञान उत्पन्न हुआ व उस अज्ञान से अन्धविश्वास, कुरीतियां आदि पतनकारी परिस्थितियां उत्पन्न हो गईं। ऐसे समय में यज्ञ में पशुओं की हिंसा होने लगी, जन्मना जाति

व्यवस्था आरम्भ हुई तथा ब्राह्मणों को वैदिक काल में सबसे अधिक सम्मान व अधिकार प्राप्त थे जिसका आधार उनके गुण, कर्म व स्वभाव होते थे। अब गुण–कर्म–स्वभाव पीछे हो गये और जन्म के आधार पर अज्ञानी जन्मना ब्राह्मणवर्गीय लोग उन ज्ञानी व निष्पक्ष ब्राह्मणों वाले अधिकारों का दुरूपयोग करने लगे जिससे क्षत्रिय, वैश्यों पर अन्याय व शोषण होने लगा और शूद्रों के प्रति तीनों ही वर्णों का पक्षपात, शोषण व अन्याय होने लगा। मध्यकाल में बौद्ध, जैन व अद्वैत मत अस्तित्व में आये परन्तु विशेष सुधार नहीं हुआ। समाज में मिथ्या विश्वास मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, छुआछूत, ऊंच–नीच आदि प्रचलित हो गये। सामाजिक व्यवस्था पूरी तरह से ध्वस्त हो गई जिसका परिणाम कालान्तर में पराधीनता के रूप में हुआ। पहले हम यवनों वा मुस्लिमों के गुलाम हुए और बाद में अंग्रेजों के। यह भी तथ्य है कि भारत पूरी तरह से गुलाम कभी नहीं हुआ, कुछ शक्तिशाली राजा व रियासतें गुलामी से बाहर रहीं और विरोधियों व शत्रुओं का मुकाबला करती रहीं और अपनी स्वतन्त्रता और स्वाभिमान को अक्षुण रखा। ऐसा होते–होते उन्नीसवीं सदी का पूर्वाद्ध आ गया।

उन्नीसवीं शताब्दी में भारत दासता के पंक में जकड़ा हुआ था। अंग्रेजों की सत्ता थी तथा देशवासियों पर अमानवीय अत्याचार होते थे। जो लोग पढ़ लिखकर अंग्रेजों की जी–हजूरी करते थे, वही समाज में सुखपूर्वक आत्मसम्मान खोकर जीवन व्यतीत करते थे। किसानों पर लगान अत्यधिक था। इसी प्रकार से देश भर में दरिद्रता का साम्राज्य था। देश में ऐसा कोई देशी राजा व पौराणिक धर्म के ठेकेदार नहीं थे जो देशवासियों का मार्गदर्शन करते और उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वाभिमान की रक्षा, सद्धर्म की शिक्षा व पालन तथा स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ाते। ऐसा लगता है कि हमारे सभी लोग मानसिक रूप से परतन्त्रता को पूरी तरह से स्वीकार किये हुए थे। उनके रक्त व मन में स्वतन्त्रता व स्वाभिमान की भावना नहीं थी। ऐसे समय में 12 फरवरी, 1825 को गुजरात प्रान्त के राजकोट जनपद के टंकारा कस्बे वा ग्राम में एक औदीच्य ब्राह्मण श्री करशनजी तिवारी के यहां एक बालक का जन्म होता है जिसका नाम मूलशंकर रखा गया और उन्हें कुल परम्परा के अनुसार शैव मत में दीक्षित करने के लिए बचपन से ही संस्कार डाले गये। मूलशंकर की लगभग 14 वर्ष की आयु में शिवरात्रि आती है। पिता के कहने से वह शिवरात्रि का व्रत–उपवास करते हैं। रात्रि जागरण करते हुए मन्दिर में चूहों की घटना घटती है जो बालक मूलशंकर को सच्चे शिव की खोज की प्रेरणा देती है। कालान्तर में उनकी बहिन और चाचा की मृत्यु होने पर उन्हें मृत्यु से बचने के उपाय जानने की जिज्ञासा होती है। कोई समाधान नहीं मिलता। वैराग्य के अंकुर उदित होने के कारण माता–पिता उन्हें विवाह बन्धन में बांधने का निर्णय करते हैं। जब विवाह से बचने का मार्ग नहीं मिला और विवाह में कुछ ही दिन शेष थे तो बालक मूलशंकर गृहत्याग कर देते हैं। कुछ समय बाद वह **शुद्ध चैतन्य** ब्रह्मचारी बन जाते हैं और कालान्तर में संन्यास लेकर स्वामी दयानन्द सरस्वती नाम धारण करते हैं। इस बीच स्वामीजी के सत्य की खोज के प्रयास जारी रहते हैं। वह देश भर में भ्रमण कर साधु संन्यासियों से सच्चे शिव व मृत्यु से बचने के उपाय पूछते रहते हैं। वह योग में प्रवीण हो जाते हैं, विविध प्रकार का आध्यात्मिक ज्ञान भी प्राप्त कर लेते हैं परन्तु उनके आध्यात्मिक सिद्धान्त व मान्यतायें निश्चित नहीं हो पाती। **इसी बीच सन् 1857 का भारत का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का समय आता है। वह इस क्रान्ति में अपनी भूमिका के बारे में मौन रहे, किसी को कुछ नहीं बताया परन्तु उनके साहित्य में प्रस्तुत विचारों व उनकी भावी कार्यशैली से स्पष्ट अनुमान होता है कि वह इस आन्दोलन में खामोश, चुप या मौन नहीं**

रह सकते थे। उन्होंने किस प्रकार से स्वतन्त्रता आन्दोलन में क्या भूमिका निभाई, अंग्रेजों का राज्य होने के कारण, उनको मौन रहना पड़ा। यदि वह आजादी के बाद तक जीवित रहते तो सभी तथ्य सामने आ जाते। समाज का एक ज्ञानी युवा संन्यासी परतन्त्रता के विरूद्ध संघर्ष में मौन व निष्क्रिय नहीं हो सकता, ऐसा हमारा अनुमान व आंकलन है।

1857 की क्रान्ति व उसके बाद अंग्रेजों का उसे कुचलने का अभियान सन् 1860 में कुछ शिथिल होता है। इस अवसर पर 35 वर्षीय स्वामी दयानन्द कहीं से प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती से विद्यार्जन के लिए मथुरा पहुंचते हैं और उनके अन्तेवासी शिष्य बनकर लगभग 3 वर्ष तक अध्ययन कर वेद–विद्या निष्णात् बनते हैं। गुरू की आज्ञा, प्रेरणा तथा स्वयं भी इसी कार्य को उचित मानते हुए वह वेदोद्धार, सर्वांगीण सामाजिक क्रान्ति, अज्ञान–अन्धविश्वास–कुरीतियों का समूलोच्छेद करने का निर्णय करते हैं। **वेद प्रचार क्या है?** वेद प्रचार सत्य ज्ञान जो तृण से लेकर ईश्वर तक पदार्थों तक का है, उसका प्रचार–प्रसार है, और यही मानव कर्तव्य व धर्म भी है। वेद प्रचार को लोग धर्म प्रचार तक सीमित मानते हैं, यह उचित नहीं है। स्वामीजी ने एक क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश लिखा है। उसमें वह ईश्वर के सच्चे स्वरूप व उसकी उपासना के निर्धारण व प्रचार के साथ सामाजिक उत्थान व सुधार को अधिक महत्व देते हैं। शिक्षा सब सुधारों का सुधार है, अतः इस पर भी वह आरम्भिक समुल्लासों में विस्तार से प्रकाश डालते हैं। वेदों को वह मानव जाति की सबसे महत्वपूर्ण सम्पत्ति व निधि मानते हैं, इसलिये इसके अध्ययन–अध्यापन, रक्षा व प्रचार पर विशेष बल देते हैं। **वैदिक ज्ञान व शिक्षा वह साधन है जिससे बुद्धि का पूर्ण विकास होता है। जिसकी बुद्धि का पूर्ण विकास होगा वह न तो दास बन सकता है, बना रह सकता है और न किसी को दास बना सकता है।** अतः महर्षि दयानन्द के वेद प्रचार आदि सभी कार्य देश में ज्ञान व विज्ञान का विकास व उन्नति कर अज्ञान, अन्धविश्वास, कुरीतियों, बाल विवाह, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, सामाजिक असमानता–विषमता सहित **परतन्त्रता को दूर करने वाले व स्वतन्त्रता को उत्पन्न करने वाले** कार्य थे। महर्षि दयानन्द ने 10 अप्रैल, 1875 को मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की थी। आर्यसमाजों में प्रत्येक रविवार को साप्ताहिक अधिवेशन व सत्संग होते थे जहां सन्ध्या–यज्ञ सहित भजन व धार्मिक प्रवचनों के साथ–साथ देश व समाज के सुधार पर विचार किया जाता था। समाज सुधार में सबसे बड़ी बाधा तो अज्ञान, धार्मिक अन्धविश्वास एवं सामाजिक कुरीतियां ही थी तथा इसके साथ परतन्त्रता भी एक कारण था। परतन्त्रता के हानिकारक परिणामों को भारत में यदि सबसे पहले किसी ने अनुभव किया तो वह महर्षि दयानन्द थे। स्वतन्त्रता के लाभ व परिणामों को अनुभव कर ही उन्होंने 1857 की क्रान्ति के बाद इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया की घोषणा का शब्दशः खण्ड किया था। इस घोषणा का खण्डन व प्रति–उत्तर महर्षि दयानन्द ने मौखिक नहीं अपितु लिखित रूप में दिया। सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने लिखा है कि **''कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा, मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर पिता–माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। परन्तु भिन्न–2 भाषा, पृथक–पृथक् शिक्षा, अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। बिना इस के छूटे, परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है।''** इन पंक्तियों में महर्षि दयानन्द स्वदेशीय राज्य को सर्वोपरि उत्तम राज्य की संज्ञा देने के साथ विदेशियों का

कितना ही अच्छा राज्य हो, उसे वह पूर्ण सुखदायक होना किसी भी परिस्थिति में स्वीकार नहीं करते। **हम समझते हैं कि महर्षि दयानन्द जी के यह वाक्य स्वतन्त्रता आन्दोलन की नींव थे।** इसका कारण यह है कि महर्षि दयानन्द से पूर्व किसी अन्य मनुष्य या महापुरूष ने देश की आजादी के लिए इस प्रकार के स्वतन्त्रतापरक उच्च भावों, वाक्यों व शब्दों को कहीं नहीं लिखा। दसवें सम्मुल्लास में एक स्थान पर महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि जब स्वदेश ही में स्वदेशी लोग व्यवहार करते (और परदेश में नहीं करते) **और परदेशी स्वदेश में व्यवहार वा राज्य करें तो बिना दारिद्रय और दुःख के दूसरा कुछ भी नहीं हो सकता। इस पंक्ति में महर्षि दयानंद स्वदेश में परदेशी लोगों के राज्य को देशवासियों के दारिद्रय व सभी दुखों का कारण बता रहे हैं।** यह एक प्रकार से स्वामी दयानंद की अंग्रेजों को देश छोड़ने और अपने देश वापस जाने की चुनौती वा चेतावनी है। इसी प्रकार से उन्होंनें आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों में भी लिखा है। यही विचार, भावना व वाक्य अनेक वर्षों बाद आजादी के आन्दोलन का आधार बने।

आजादी का आन्दोलन दो धाराओं में चला जिसमें एक गरम घारा थी व दूसरी को नरम या अंहिसा की धारा कह सकते हैं। **क्रान्ति की धारा के प्रणेता श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा थे तथा शान्ति धारा के प्रणेता महादेव गोविन्द रानाडे थे।** यह दोनों व्यक्ति महर्षि दयानन्द के साक्षात् शिष्य थे। यदि यह कहें कि इन दोनों ने देशभक्ति एवं स्वतन्त्रता का पाठ स्वामी दयानन्द जी से ही पढ़ा था तो इसमें कोई अत्युक्ति नहीं है। पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा के शिष्यों में वीरसावरकर जी जैसे अद्वितीय देशभक्त व क्रान्तिकारी हुए जिन पर पूरे देश को नाज, गौरव व अभिमान है। इन्हीं से प्रेरणा पाकर अन्य क्रान्तिकारी संगठन अस्तित्व में आये। इसी प्रकार से महादेव गोविन्द रानाडे के शिष्य गोपालकृष्ण गोखले थे जिनके शिष्य महात्मा गांधी जी हुए। **इस प्रकार से आजादी की दोनों धाराओं के प्रणेता स्वामी दयानन्द जी निश्चित होते हैं। इस कारण आजादी मिलने का सर्वाधिक श्रेय यदि किसी को है तो वह आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को है।** यह उल्लेखनीय तथ्य है कि कांग्रेस की स्थापना आर्य समाज की स्थापना के 10 वर्ष बाद सन् 1885 में हुई। उस समय तक आर्यसमाजों में देश भक्ति व देश की आजादी की गुपचुप चर्चायें आर्यसमाजों में व इसके अनुयायियों द्वारा एक दूसरे से मिलने पर किया करते थे। कांग्रेस की स्थापना करने वालों में श्री ए.ओ. ह्यूम आदि लोग अंग्रेजों के विरोधी नहीं अपितु एक प्रकार से समर्थक व सहयोगी भी थे। वह अंग्रेजों से प्रार्थना कर कुछ सुधार करना चाहते थे। आजादी उनमें से किसी का भी उद्देश्य व स्वप्न नहीं था। कांग्रेस ने भी पूर्ण स्वराज्य की मांग बहुत वर्षों बाद की। यह उल्लेखनीय है कि जब यह दोनों आन्दोलन चले तो अन्य कोई नेतृत्व न मिलने के कारण आर्यसमाज के लोगों ने इन दोनों ही नरम और गरम दलों का चुनाव किया। यह भी उल्लेखनीय तथ्य है कि आजादी के आन्दोलन में भाग लेने वालों में लगभग 80 प्रतिशत लोग आर्य समाज के विचारों को मानने वाले व उससे प्रभावित थे।

देश में आजादी व देश के संचालन के विषय में यदि कहीं कोई साहित्य व लिखित विचार मिलते हैं तो वह वेदों व वैदिक साहित्य में ही प्राप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त वैदिक धर्म से इतर किसी भी मत की पुस्तक में इनका संकेत भी नहीं मिलता। वेदों के आधार पर आर्यसमाज के विद्वान पं. प्रियव्रत वेदवाचस्पति ने वेदों में राजनीति सम्बन्धी ज्ञान–विज्ञान पर तीन खण्डों में ग्रन्थ लिखा है। वेद किसी देश में राज्य सत्ता का संचालन स्वदेशीय राजाओं द्वारा ही किये जाने के पक्षधर हैं। अतः वेदों के यह विचार भी विदेशी दासता से मुक्ति व स्वदेशी शासन व्यवस्था की

नियुक्ति के पक्षधर हैं। मनुस्मृति भी राजा के गुणों एवं राजव्यवस्था सहित युद्ध नीति पर विस्तार से प्रकाश डालती है। इसके अतिरिक्त सत्यार्थ प्रकाश, शुक्रनीति, महाभारत एवं रामायण से भी शासन व्यवस्था पर सर्वांगीण प्रकाश पड़ता है। यह भी एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि वेदों या वैदिक साहित्य में अपनी शक्ति के बल पर किसी देश को गुलाम बनाने व वहां के धन वैभव को लूटने का कहीं कोई संकेत नहीं मिलता। इसलिए वेद ही सर्वोत्तम धर्म सिद्ध होता है।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश का छठा समुल्लास राजधर्म विषय को समर्पित किया है। इसके अन्तर्गत उन्होंने राजधर्म, राज्य संचालन हेतु तीन–सभाओं राजार्य सभा, विद्यार्य सभा तथा धर्मार्य सभा, राजलक्षण, दण्ड व्यवस्था, राज–कर्तव्य, अष्टादशव्यसननिषेध, मन्त्री, दूतादि राज पुरूषों के लक्षण, मन्त्रियों के कार्य व कर्तव्य तथा दुर्ग निर्माण, युद्ध के प्रकार, राज्यरक्षा विधि, ग्राम के अधिकारियों का वर्णन, कर ग्रहण करने के प्रकार आदि अनेक विषयों का वर्णन विस्तार से किया है जो किसी स्वतन्त्र देश में ही होता है। **इससे यह भी भाषित होता है कि उन्हें कालान्तर में देश के स्वतन्त्र होने की आशा थी और उसी निमित्त उन्होंने यह छठा समुल्लास लिखा था, अन्यथा इसका क्या उपयोग था?** देश के आजाद होने पर हमारे देश के नेताओं ने इन उपादानों का लाभ न उठा कर विदेशी संविधानों आदि की नकल ही की है और प्रायः अंग्रेजी राज्य के कानूनों आदि व्यवस्था को यथावत स्वीकार कर लिया। **वैदिक शासन व राज्य व्यवस्था से परिचित कराना भी महर्षि दयानन्द की एक बहुत बड़ी देन है।** महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ के छठे समुल्लास में वेद और मनुस्मृति आदि के उद्धरण दिये हैं। इसमें ऋग्वेद के 2, अथर्ववेद के 3, यजुर्वेद का 1, शतपथ ब्राह्मण का 1 तथा मनुस्मृति के 190 श्लोकों को उद्धृत किया है। अतः राजधर्म व देश की व्यवस्था के संचालन में मनुस्मृति एक उपयोगी ग्रन्थ रहा है और आज भी प्रासंगिक है जिसका सत्यार्थ प्रकाश में विस्तार से वर्णन कर महर्षि दयानन्द ने देश व विश्व का उपकार किया है।

महर्षि दयानन्द ने देश को सबसे पहले स्वतन्त्रता व स्वराज्य का मन्त्र दिया। उनके दो शिष्य पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा एवं महादेव गोविन्द रानाडे क्रान्ति और अहिंसात्मक आन्दोलनों के प्रणेता कहे जा सकते हैं। आजादी के आन्दोलन में सर्वाधिक सत्याग्रही व क्रान्तिकारी आर्य समाजी व महर्षि दयानन्द के अनुयायी थे। न केवल स्वतन्त्रता आन्दोलनकारी अपितु इनका नेतृत्व करने वाले लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, पं. रामप्रसाद, बिस्मिल और शहीद भगत सिंह आदि भी आर्यसमाजी और महर्षि दयानन्द के अनुयायी थे। अतः आजादी के आन्दोलन में सबसे अधिक योगदान यदि किसी का था तो वह महर्षि दयानन्द व उनकी संस्था आर्यसमाज का ही मानना होगा। दुःख एवं खेद की बात है कि देश के आजाद होने पर महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के योगदान की उपेक्षा की गई और उसे भुला दिया गया। इसका कारण इन विषयों का निर्णय करने वाले लोग आर्यसमाज के प्रति पक्षपात रखने वाले व विरोधी विचारधारा वाले थे। सत्य कभी छिप नहीं सकता अतः कभी न कभी महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के स्वतन्त्रता आन्दोलन में सर्वोपरि योगदान को देश को स्वीकार करना ही होगा। हम यह भी कहना चाहते हैं 15 अगस्त, 1947 को प्राप्त स्वतन्त्रता अधूरी है। जब तक सभी देशवासी वेदों के सिद्धान्तों व मान्यताओं को स्वीकार कर उनका आचरण नहीं करते, यह स्वतन्त्रता खतरे में रहेगी। अतः वेद प्रचार देश की स्वतन्त्रता के लिए परम आवश्यक कार्य है। सत्य, तर्क, ज्ञान व मानव हित की दृष्टि से यही राजधर्म होना चाहिये।

सौजन्य से– KUKREJA INSTITUTE OF HOTEL MANAGEMENT
DEHRADUN

काकोरी कांड के प्रणेता चन्द्रशेखर आजाद

श्री रमेशचन्द्र मित्तल

काकोरी कांड	:	09–08–1925
चन्द्रशेखर आजाद की शहीदी तिथि	:	27–02–1931

दिनांक 26 फरवरी सन् 1931 की अन्तिम रात्रि में कटरा (इलाहाबाद) के किराये के मकान में आज़ाद, भवानी सिंह रावत तथा सुरेन्द्र पाण्डेय के साथ सोये थे। प्रातः काल श्री यशपाल उनसे मिलने आये थे, तथा चन्द्रशेखर आज़ाद को नेहरू परिवार की ओर से बारह सौ अथवा पन्द्रह सौ रूपये दे गये थे।

श्री चन्द्रशेखर आज़ाद को घेरने व मारने का षड़यन्त्र गुप्तचर शाखा के स्पेशल पुलिस सुपरिटैंडैन्ट जे.एच. नाटबावर नामक अंग्रेज ने रचा था, जिसमें कानपुर के वीरभद्र तिवारी नामक देशद्रोही व अंग्रेजों का पिट्ठू सम्मिलित था। इस गद्दार तिवारी को मारने के लिये 46/131, बादशाही नाका, कानपुर के श्री रमेश चन्द्र गुप्ता ने पूर्ण निष्ठा, कर्तव्यपरायणता तथा साहस के साथ दो बार दो भिन्न–भिन्न स्थानों से निशाना साधा तथा गोली चलाई, परन्तु वह मरा नहीं, केवल घायल ही हो सका था तथा बच गया। परन्तु तत्कालीन विदेशी (अंग्रेज) सरकार ने श्री रमेश चन्द्र गुप्ता को दस वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड दिया।

जब श्रद्धेय वीर चन्द्रशेखर आज़ाद व श्री सुखदेव राज, इलाहाबाद के 'एलफ्रेड पार्क' में बैठे गुप्त मन्त्रणा कर रहे थे तो उन्हें थॉर्नहिल रोड़ पर अवस्थित म्योर सैन्ट्रल कॉलेज की ओर से एक व्यक्ति आता हुआ दिखाई दिया, जिसको शहीद चन्द्रशेखर आज़ाद ने पहचान लिया। वह और कोई नहीं था पुलिस का मुखबिर कानपुर का दुष्ट वीरभद्र तिवारी था। श्री आजाद ने अपने बचाव में एक जामुन के पेड़ की ओट से गोलियां चलाईं। परन्तु ईश्वर को कुछ और ही स्वीकार था, हमारे परम प्रिय श्री चन्द्रशेखर आज़ाद दिनांक 27–02–1931 को वीरगति को प्राप्त कर शहीद हो गये। तत्कालीन विदेशी (अंग्रेज) सरकार ने कालान्तर में उस जामुन के वृक्ष को कटवा दिया, जिसकी ओट से उन्होंने अपने "माउज़र" से गोलियां चलाई थीं।

काकोरी

शाहजहांपुर और लखनऊ के बीच में उत्तर रेलवे है, जहां पर क्रान्तिकारियों ने 'पंजाब मेल' रेलगाड़ी को चेन पुलिंग के माध्यम से रुकवा कर सरकारी खज़ाना (रेल विभाग का कैश चैस्ट–स्टील का बहुत बड़ा व भारी बक्सा) लूटा था, क्योंकि क्रान्तिकारियों के पास अत्यधिक धनाभाव था तथा हथियार आदि क्रय करने (तथा अन्य तत्सम्बन्धी विस्फोटक पदार्थ क्रय करने हेतु) धन की आवश्यकता थी। इस लूट में श्री चन्द्रशेखर आज़ाद की मुख्य भूमिका रही थी, परन्तु किसी भी रेलयात्री को किसी प्रकार का नुकसान नहीं पहुँचाया गया। इस साहसिक कार्य की योजना आर्य समाज मन्दिर, शाहजहांपुर में कुछ दिन रहकर बनाई गई थी, जिसमें पंडित रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाक उल्ला तथा चन्द्रशेखर आज़ाद जैसे महान् क्रान्तिकारियों ने भाग लिया था।

अमर शहीद चन्द्रशेखर आज़ाद का जन्म पंडित सीताराम जी तिवारी– जो तहसील झाबुआ (मध्य प्रदेश) ग्राम भावरा (अलीराजपुर रियासत का एक ग्राम) के निवासी थे– के घर में 23 जुलाई 1905 को हुआ था। काशी (वाराणसी) की एक पाठशाला से आपने (श्री आज़ाद ने), 'लघु सिद्धान्त कौमुदी' तथा 'अमरकोष' जैसे ग्रन्थों का पाठ व अध्ययन किया तथा किशोरावस्था में ही आप देश की आजादी की लड़ाई में कूद पड़े थे तथा खुशी–खुशी बड़ी–बड़ी यातनायें सहीं, कष्ट व मुसीबतें उठाई, परन्तु चेहरे पर शिकन तक भी नहीं पड़ने दी। ऐसे थे हमारे प्रिय अमर शहीद वीर चन्द्रशेखर आज़ाद।

भारत की प्रथम स्वातन्त्रय समर के प्रणेता–मंगल पांडे

आर्य रवीन्द्र कुमार

भारत को स्वाधीन कराने की ललक भारतीयों में सदा ही रही है। तब भी जब वे मुगलों के गुलाम थे और उसके पश्चात् भी जब वे अंग्रेजों के गुलाम बने। हां, उसमें केवल एक अन्तर था कि अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीयों में वे मुसलमान भी सम्मिलित हो गए थे जिन्होंने भारत को अपना देश मान लिया था। अंग्रेजों को भारत का मार्ग मुगलों ने ही दिखाया था और अन्ततः अंग्रेजों ने भारत के साथ–साथ मुगलों को भी डस लिया और धीरे–धीरे सम्पूर्ण भारत को अपना गुलाम बना लिया। सन् 1857 में, भारत में कहने को तो मुगल साम्राज्य था, परन्तु मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर एक अशक्त और निर्बल बादशाह था जिसकी सत्ता दिल्ली तक ही सीमित होकर रह गई थी। वह न तो बहादुर था और न ही सबल और शक्तिशाली। भारत के अन्य भागों में भी अधिकतर हिन्दू राजा और मुस्लिम जागीरदार अशक्त और निर्बल थे वे केवल अपने–अपने स्वार्थों तक ही सीमित थे। यही इतिहास का परम् सत्य है।

परन्तु भारतीयों ने इस परिवर्तन को कभी भी हृदय से स्वीकार नहीं किया और अपनी–अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार विरोध करते रहे। इनमें हिन्दू, मुसलमान और सिख आदि सभी सम्मिलित थे। परन्तु सन् 1857 से पूर्व के सभी प्रयत्न छोटे–छोटे टुकड़ों तक ही सीमित रहे और राष्ट्रीय समर का रूप न ले सके। टीपू सुल्तान आदि ने दक्षिण अंग्रेजों का विरोध किया। कुछ अन्य स्थानों पर भी विरोध हुआ, परन्तु वह विद्रोह सीमित ही रहे।

भारत की प्रथम स्वातन्त्रय समर का शुभारम्भ बंगाल की पवित्र धरती पर हुआ। बरकपुर की बैरकों में से एक अग्नि उठी और उसकी विशाल लपटों में ईस्ट इंडिया कम्पनी और उनके सहयोगी बुरी तरह फंस गए। सन 1857 में अंग्रेजों ने जानबूझ कर भारत में नई 'इन्फिल्ड राईफल' का प्रयोग आरम्भ किया, जिसमें विशेष प्रकार के कारतूस भरे जाते थे। उन कारतूसों को भरने से पहले उन्हें ऊपर की ओर से दांत से काट कर छीला जाता था। अधिकारियों ने ब्रिटेन से एक विशेष प्रकार के कारतूस मंगवाए जिनका खोल गाय और सूअर की चरबी से बना हुआ था। (अथवा इन पशुओं की चरबी से बनी ग्रीस लगी होती थी) यह हिन्दुओं और मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं पर सीधा आक्रमण था जो अंग्रेजों का भारत समाज के विरुद्ध एक षड्यन्त्र था। जब यह बात सेना में फैली तो हिन्दू और मुस्लिम सिपाही भड़क उठे और उनमें असन्तोष फैल गया। उस समय अंग्रेजों की तीन लाख की सेना में 96 प्रतिशत भारतीय थे।

मेरठ का रणबांकुरा सिपाही मंगल पांडे इस बात को पचा न सका और 29 मार्च 1857 को सायं परेड के समय उसने विद्रोह का बिगुल बजा दिया। वीर मंगल पांडे का जन्म 11 जुलाई 1827 को उत्तर प्रदेश के बलिया

हमेशा एक प्रतिशत व्यक्तियों से अपना कष्ट कहें, वही आपकी सहायता करेंगे क्योंकि–
करीब पचास प्रतिशत लोग आपकी बात समझेंगे नहीं और उनचास प्रतिशत लोग आपका मजाक बनाएंगे।

जिले के भूमिहर ब्राह्मण परिवार में हुआ था। (कुछ लेखक उनका जन्मस्थान अकबरपुर जिले के सुरहुपुर को मानते हैं।) मंगल पांडे ब्राह्मण थे तथा सेना में भी अपनी धार्मिक आस्थाओं का दृढ़ता से पालन करते थे। उन्होंने बाईस वर्ष की आयु में सन् 1849 को ईस्ट इण्डिया कम्पनी की पांचवी मिलिट्री कम्पनी की 34वीं रेजिमेन्ट में नौकरी आरम्भ की थी। सन् 1857 में उनकी 34वीं बटालियन कलकत्ता के समीप बरकपुर में नियुक्त थी। उस स्थान का नाम बरकपुर सम्भवतः इसी कारण पड़ा क्योंकि वहां पर अंग्रेजों ने अपनी बैरक बनाई थी। 29 मार्च 1857 को दोपहर के पश्चात् सिपाही मंगल पांडे, अपनी भरी हुई मस्कट को लेकर, अपने क्वार्टर के बाहर आकर खड़ा हो गया और अपने साथियों को अधिकारियों के इस धर्म–विरुद्ध कार्य का विरोध करने के लिए ललकारने लगा। जब इसकी सूचना उनके अधिकारी लेफ्टिनेट वाग (Baugh) को दी गई कि एक सिपाही मंगल पांडे अपने हाथ में भरी हुई बन्दूक लिए अपने साथियों को विद्रोह करने के लिए भड़का रहा है और अंग्रेजों को देखते ही गोली मारने को कह रहा है। (अंग्रेजों ने अपने इस अधार्मिक और भड़काने वाले कुकृत्य को छिपाने के लिए अपने रोजनामचे में लिखा कि मंगल पांडे उस समय नशे में था।) अंग्रेजों ने मंगल पांडे पर यह घृणित आरोप लगाकर उनके महान राष्ट्रभक्त कार्य को मिटाने का प्रयास किया है। सत्य तो यही है कि उस समय मंगल पांडे और उनके साथी अंग्रेजों द्वारा नित्य किए जा रहे अत्याचारों के विरुद्ध राष्ट्रभक्ति के उन्माद से भरे हुए थे।

वाग ने तुरन्त अपनी तलवार को कमान में रखा, अपनी भरी हुई पिस्तोलों को अपने शरीर से लगी चमड़े की जेब में रखा और घोड़े पर सवार होकर मैदान की ओर गया। पांडे ने घोड़ों की टापों की आवाज सुनकर मैदान में रखी स्टेशन–गन की आड़ ले ली।, वाग पर निशाना साधा और गोली चला दी। मंगल पांडे का निशाना चूक गया और गोली उसके घोड़े को लगी। वाग और घोड़ा जमीन पर गिर पड़े। वाग तुरन्त जमीन से उठा और अपनी एक पिस्तौल निकाल कर मंगल पांडे पर गोली चला दी, परन्तु उसका भी निशाना चूक गया। इससे पहले कि वाग अपनी तलवार निकाल पाता, तलवार के धनी मंगल पांडे ने अपनी भारी भरकम भारतीय तलवार से आक्रमण कर दिया और उसके कंधे और गर्दन पर आक्रमण करके उसे जमीन पर गिरा दिया। वहां खड़े बीस से अधिक सिपाहियों में से किसी ने उन अंग्रेजों का साथ नहीं दिया। वे सभी वास्तव में अन्दर ही अन्दर अंग्रेजों से घृणा करते थे। केवल एक सिपाही शेख पलटू उन अंग्रेजों की सहायता को आगे आया और उसने मंगल पांडे को अपनी बन्दूक भरने से रोकने का प्रयत्न किया।

ब्रिटिश सार्जेट मेजर हासन (Hewson) इसकी सूचना पाते ही तुरंत मैदान में आ गए। उसने आते ही एक जमादार ईश्वर प्रशाद को मंगल पांडे को बन्दी बनाने का आदेश दिया, परन्तु उसने यह कहते हुए इन्कार कर दिया कि वह यह कार्य अकेले नहीं कर सकता। तब हासन ने मंगल पांडे को तुरन्त जमीन पर लेटने को कहा। तभी घायल वाग चिल्लाया कि सर आप अपनी जान की सुरक्षा के लिए दांयी तरफ

उपेक्षा एक उत्तम दंड है, जो अपने प्रिय जनों को दिया जाता है।
यही उपेक्षा बहुत कष्टदायक है, जब अपने प्रियजन हमें यह दंड देते हैं।

हो जाइये। यह सिपाही आप पर गोली चला देगा। तभी मंगल पांडे ने गोली चला दी। इस प्रकार वह महावीर अकेला उन दोनों अंग्रेज अधिकारियों से लड़ता रहा और अन्ततः उसने अपनी बन्दूक के बट से हासन को जमीन पर गिरा दिया। शेख पलटू तब भी उन दोनों अंग्रेज अधिकारियों का साथ देता रहा। जब मेजर हासन ने अन्य सिपाहियों को अपनी सहायता के लिए पुकारा तो उन्होंने शेख पलटू को धमकाया कि अगर उसने मंगल पांडे को नहीं छोड़ा तो वे उस पर गोली चला देंगे।

तभी ट्रूप (Troop) के जमादार, ईश्वर प्रशाद के आदेश पर, सिपाहियों ने उन दोनों अधिकारियों और शेख पलटू पर बटों से वार किया, जिस कारण दोनों अधिकारी घायल होकर एक ओर गिर गए और शेख पलटू घायल होकर मंगल पांडे को छोड़कर दूसरी ओर गिर गया।

तभी कम्पनी के कमांडिंग ऑफिसर जनरल हियरसे और उसके दो पुत्र वहां आ पहुंचे और उन्होंने अपनी रिवाल्वर निकाल कर अन्य सिपाहियों को गोली मारने की धमकी देकर मंगल पांडे को बन्दी बनने के लिए विवश दिया। जब मंगल पांडे ने स्वयं को चारों ओर से घिरे हुए देखा तो उसे योद्धा ने स्वयं को बन्दी होने से बचाने के लिए अपनी मस्कट की नाली को अपनी छाती की ओर मोड़ ली और फिर अपने पांव से ट्रीगर दबाते हुए स्वयं पर गोली चला ली। इस प्रकार मंगल पांडे घायल होकर धरती पर गिर गए। तब उन्हें बन्दी बनाकर अस्पताल ले जाया गया।

मंगल पांडे जब कुछ स्वस्थ हुए तो उन पर अभियोग चलाया गया। उन्हें फांसी का दण्ड दिया गया और 18 अप्रैल 1857 को फांसी की तिथि घोषित कर दी। परन्तु अंग्रेजों ने एक षड्यन्त्र के अन्तर्गत, न्याय का अपमान करते हुए, उन्हें दस दिन पूर्व 8 अप्रैल 1857 को फांसी दे दी। जमादार ईश्वर प्रशाद को भी 21 अप्रैल को फांसी दे दी गई। इसी के साथ 6 मई 1857 को 34वीं रेजीमेन्ट को समाप्त कर दिया गया। जनरल हियरसे ने शेख पलटू को उन्नति देकर हवलदार बना दिया।

मंगल पांडे के इस महान कार्य की सूचना ज्योंहि अन्य छावनियों तब पहुंची तो वहां पर इस उत्साहित करने वाली घटना का उचित प्रभाव हुआ। भारत के अधिकतर भागों में सैनिक उत्तेजित होने लगे। परन्तु जब मंगल पांडे और ईश्वर प्रशाद को फांसी दी गई तो उसका भी उन पर प्रभाव हुआ। बाकी विद्रोह में जो कमी रह गई थी, उसे रेजीमेन्ट की समाप्ति ने पूरा कर दिया। अंग्रेजों ने अपने रोजनामचे में मंगल पांडे पर नशे में होने का आरोप लगाया है, वह न केवल गलत है अपितु षड्यन्त्र से भरपूर है। अगर ऐसा था तो ईश्वर प्रशाद ने उनके आदेश को क्यों नहीं माना? अन्य सैनिकों ने मंगल पांडे को बन्दी बनाने में सहयाता क्यों नहीं की? पूरी रेजिमेन्ट को समाप्त क्यों कर दिया गया? सत्य यही है कि सभी सैनिक अन्दर ही अन्दर भड़के हुए थे और उन्हें एक चिंगारी की आवश्यकता थी जो मंगल पांडे के विद्रोह ने उन्हें दी। सभी अंग्रेज और उनके पिछलग्गू तथा कथित विद्वान लेखक मंगल पांडे के विषय में चाहे कुछ भी गलत क्यों न लिखे, सत्य छिप नहीं सकता। ये तथाकथित

उपेक्षा एक सीमा तक आपका मूल्य लोगों की नजरों में बढ़ायेगी।
परंतु यदि ये आदत बन गई, तो आप दूसरों की उपेक्षा के शिकार बन जायेंगे।

बुद्धिजीवी अंग्रेजों के प्रभाव में आकर अभी भी भारत के इतिहास की सच्चाई को नष्ट करने में लगे हुए हैं। हमें उनके कुकृत्यों से सावधान रहना चाहिए। मंगल पांडे वास्तव में एक महान क्रांतिकारी योद्धा थे जिन्होंने समूचे राष्ट्र में अंग्रेजों के विरुद्ध एक राष्ट्रव्यापी समर की आधारशिला रखी थी। उस राष्ट्रव्यापी क्रांतिकारी स्वतंत्रता समर ने उस समय विश्व के सबसे बड़े साम्राज्य को भी हिलाकर रख दिया था।

इस प्रकार सैनिकों के बीच विद्रोह आरम्भ हुआ और धीरे–धीरे समूचे राष्ट्र में फैल गया। इसकी दूसरी सशक्त चिन्गारी 10 मई 1847 को मेरठ में उठी जो तुरन्त ही सब ओर फैल गई। इस विद्रोह को स्वतंत्रता समर में परिवर्तित करने में सूखी चपाती और कमल के फूल का बहुत बड़ा हाथ था जिन्होंने इसे घर–घर में पहुंचा दिया। 9 मई 1857 को मेरठ में नियुक्त तीसरी बंगाल लाईट केवेलरी के 85 जवानों ने उन कारतूसों को प्रयोग करने से इन्कार कर दिया। उनकों सबके सामने बन्दी बना लिया गया, उन्हें दस वर्ष के लिए बन्दी रखकर सशक्त कार्य का दण्ड सुनाया गया और सबके सामने उनकी वर्दियां उतरवा ली गई। उन्हें जेल ले जाते समय, सारे रास्ते उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया।

10 मई को जब बंगाल आर्मी की ग्यारहवीं और बीसवीं स्थानीय केवेलरी एकत्रित हुई तो उन्होंने विद्रोह किया। कुछ सिपाही कुछ अंग्रेज अफसरों, उनकी महिलाओं और बालकों को रामपुर के नवाब के यहां सुरक्षित छोड़कर आए और फिर विद्रोह में सम्मिलित हो गए। मेरठ में अंग्रेजों की संख्या बहुत थी परन्तु वे विद्रोहियों को रोकने में असफल रहे। कुछ ही देर में विद्रोह सैनिकों से निकल कर आम जनता के बीच पहुंच गया।

इस प्रकार सैनिकों के विद्रोह ने शीघ्र ही समर का रूप ले लिया, जब तात्यां टोपे, नाना साहिब, रानी लक्ष्मीबाई जैसे लाखों भारतीय इससे जुड़ गए और अंग्रेजों को भारत से निकालने का प्रयत्न करने लगे। हम सभी भारतीयों को चाहिए कि हम स्वयं भारत के सत्य इतिहास को जानें, समझे और मनन करें और अपनी सन्तानों को भी सत्य से ही परिचित कराएं।

सौजन्य से– **THE HERITAGE SCHOOL**
14/6, New Road, Dehradun, India

संशोधन

वैदिक साधन आश्रम तपोवन द्वारा नर्सरी से कक्षा–8 तक तपोवन विद्या निकेतन का संचालन किया जा रहा है जिसमें वर्तमान में 250 निर्धन छात्र–छात्राएं शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इस विद्यालय में बच्चों को नियमित पाठ्यक्रम के साथ–साथ वैदिक ज्ञान भी प्रदान किया जाता है तथा प्रत्येक शनिवार को आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य के प्रवचन के साथ–साथ सब बच्चे एवं अध्यापक–अध्यापिकाएं सामूहिक यज्ञ भी करते हैं। विद्यालय के बच्चों की योग्यता एवं प्रस्तुति से प्रसन्न होकर कुछ दानी भाई–बहन विद्यालय की सहायता के लिए आगे आए हैं और निम्न बन्धुओं ने तपोवन विद्या निकेतन की मदद करने का संकल्प किया। 1. श्रीमती सुन्दर शान्ता चड्ढा, नई दिल्ली–10,000 रु. प्रतिवर्ष, 2. श्री वेदभूषण रस्तोगी, गाजियाबाद–2000 रु. प्रतिमाह, 3. श्री केवल सिंह आर्य, पानीपत–500 रु. प्रतिमाह। आश्रम परिवार उपरोक्त सभी दान–दाताओं का हृदय से धन्यवाद अर्पित करता है।

कमजोर लोग परिस्थितियों के दास बनकर दुःखी होते हैं। बलवान लोग परिस्थितियों को दबा कर, उनके राजा बन कर सुखी होते हैं। बलवान बनें।

यज्ञमय जीवन की साधिका स्व० श्रीमती कृष्णा देवी महाजन

(10.10.1936–08.06.2015)

अपना सम्पूर्ण जीवन परमेश्वर की उपासना के सरल स्वरूप "यज्ञ प्रभु" के आराधन में समर्पित करने वाली श्रीमती कृष्णा देवी महाजन जी का जन्म तृतीय शारदीय नवरात्र के दिन 10 अक्टूबर सन् 1936 को अविभाजित पंजाब में (स्व0 श्री सरदारी लाल जी एवं स्व0 श्रीमती पूरण देवी जी) के घर हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करते हुए ही आपने अपने चाचा जी के प्रभाव से अमृतसर में आर्य समाज के संस्कारों से आपका जीवन उन्नति के मार्ग पर चल पड़ा। प्रभु भक्ति के भजन एवं संगीत के द्वारा सम्पूर्ण आर्य महिला समाजों में सम्मानित स्थान प्राप्त किया। स्व0 श्री चमन लाल महाजन जी से विवाह के उपरान्त दिल्ली राजौरी गार्डन को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। पूजनीया माता विद्यावती जी की प्रेरणा से वेदों को पढ़ने–पढ़ाने का अभ्यास प्रारम्भ किया। महात्मा प्रभु आश्रित जी के सत्संग से इस दम्पति ने प्रतिदिन यज्ञ करने के साथ–साथ वर्ष में एक बड़ा वेद पारायण यज्ञ घर में करने का संकल्प लिया। जिससे प्रभु की कृपा व विद्वानों का सत्संग मिलते–मिलते स्वयं सभी को यज्ञ करने की प्रेरणा देनी प्रारम्भ की। गुरुकुल करतारपुर व वैदिक भक्ति साधना आश्रम रोहतक में तथा अन्य स्थानों पर जहाँ भी यज्ञ होता था दोनों पति–पत्नि यजमान बनने में सदा अग्रणी भूमिका निभाते रहे। अपने घर पर एक सौ एक बार यजुर्वेद पारायण यज्ञ का संकल्प पूर्ण करते हुए अलग–अलग घरों में एक सौ एक बार सामवेद का पारायण यज्ञ पूर्ण कराया। अपने पतिदेव के देहावसान के बाद माता जी गुरुकुल करतारपुर ट्रस्ट की सदस्या भी रहीं। जीवन में तप–दान, जप व निर्लोभता का अभ्यास इतना हुआ कि किसी के घर यज्ञ कराने जाते हुए भोजन व प्रसाद भी अपने घर से ही बनाकर ले जाते थे। प्रतिदिन प्रातः काल दो बजे उठकर ही ब्रह्ममुहूर्त्त में साधना, गायत्री जाप व वेद स्वाध्याय करना उनका सबसे प्रिय कार्य था। वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश कर वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून व गुरूकुल मंझावली (फरीदाबाद) में साधना हेतु कुटियों का निर्माण कराकर जप–तप व साधना हेतु रहना प्रारम्भ किया।

जीवन के अन्तिम समय तक भी आर्य समाज के सत्संग में जाकर अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव करती थीं। परम पिता परमेश्वर की न्याय व्यवस्था के अनुसार दिनांक 08–06–2015 को पूजनीय माताजी का देहावसान हुआ। उनके दिये हुए संस्कारों को उनकी सुपुत्री सुरेखा जी व दामाद विनय चौपड़ा जी दैनिक यज्ञ एवं वेद स्वाध्याय के रूप में अपने परिवार के साथ दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ा रही है। श्रीमती महाजन ने जहाँ अपनी सुपुत्री सुरेखा के समग्र जीवन को यज्ञमय और वेदमय करके प्रभु की आस्था से भरा वहीं अपने दोहित्र पार्थ और राघव के जीवन को भी ईश्वरीय आस्था यज्ञ और वेद की ओर प्रेरित किया। उनका दोनों के साथ बहुत अधिक वात्सल्य था। इसके लिये समस्त परिवार उनका हृदय से आभारी है।

परमात्मा पर विश्वास

पंडित शिव शर्मा उपदेशक

एक अनाथ बेवा स्त्री अत्यन्त ही दीन और धर्मज्ञ थी। उसके दो बालक थे एक 6 वर्ष का और दूसरा 8 वर्ष का। वह जैसे–तैसे दूसरे पुरुषों के घर पर कूटना पीसना किया करती थी। वह बच्चों को नित्य दूध–बताशे एवं उत्तम भोजन खिलाया करती और पढ़ने का प्रबन्ध तथा उस का व्यय भार भी उठा रखा था। अपना निर्वाह वह केवल सूखी–रूखी रोटियों से करती थी। किसी–किसी दिन उसे पेटभर भोजन नहीं मिलता था। बच्चे बड़े धर्मात्मा और सुशील थे। वे पाठशाला से पाठ पढ़ कर घर आते और माता से दूध, बताशे माँगते थे। एक दिन ऐसा समय आया कि कहीं काम न लगने के कारण कुछ न मिला। बच्चों ने पाठशाला से आते ही नित्य की भाँति माता से दूध बताशे माँगे। माता ने उत्तर दिया, "बेटा, आज तो मेरे पास कुछ नहीं है। आज तो तुम्हें परमेश्वर ही दूध–बताशें देगा तो मिलेगा, नहीं तो तुम्हें दूध–बताशे नहीं दे सकूँगी।" बच्चों ने पूछा," माँ, परमेश्वर कौन है।"

माता ने कहा, "बेटा वह सबका पिता है। सबका पालन–पोषण करनेहारा है।" बच्चों ने यह सुन पूछा, "माँ! वह हमें दूध, बताशे देगा"। माता ने कहा, "अवश्य।" अब तो बच्चों के हृदय में यह विश्वास हो गया कि माता ही दूध–बताशे देने वाली नहीं अपितु उसके अलावा परमेश्वर भी देनेवाला है। बच्चों ने पुनः माता से पूछा, "माँ! परमेश्वर कहाँ रहता है?" माता ने आकाश की ओर अपनी अँगुली उठा दी। पुस्तक उठा बच्चे पाठशाला को चल दिये और परस्पर यह सम्मति करते जाते थे कि भाई कैसे उस परमेश्वर के पास चलें जिससे कि उससे दूध–बताशे माँग सकें। एक ने कहा," भाई, ऊपर पहुँचना तो कठिन है। परन्तु मैंने एक बात सोची है। परमेश्वर को हम दोनो एक चिट्ठी लिखें। गुरुजी से छुट्टी माँगकर उस चिट्ठी को डाक घर में डाल आयें। बड़े भाई ने कहा, "यह ठीक है।" दोनों पाठशाला पहुँच चिट्ठी लिखने लगे।

पत्र–हे पिता परमात्मा! आप सबके पालन–पोषण करनेहारे हो। हम दोनों भाई आपको नमस्कार करते हैं और आपसे यह प्रार्थना करते है कि आप आधा लीटर दूध और एक पाव बताशे हम दोनों भाइयों को नित्य भेज दिया कीजिये। हम आपके बच्चे हैं। आपने हमें बनाया है। इस कारण आप हमारा पालन भी कीजिये। अस्तु, आपके सेवक दो बच्चे जिनको आप जानते हैं। (बच्चों ने पत्र पर पता लिखा कि चिट्ठी पहुँचे पिता परमात्मा के पास)

बच्चे गुरुजी से छुट्टी माँग पोस्ट ऑफिस में चिट्ठी डालने गये। बाबू से पूछा, "बाबू, हम यह चिट्ठी" कहाँ डालें।" बाबू ने कहा, "इसे लेटरबॉक्स में डाल दो।" लड़कों का कद छोटा था और लेटरबॉक्स ऊँचे पर गड़ा हुआ था। बच्चे उचककर चिट्ठी डालने लगे परन्तु चिट्ठी लेटरबॉक्स में न डाल सके। बाबू ने लड़कों को देख कहा, "लाओं, मैं तुम्हारी चिट्ठी डाल दूँगा"। बच्चों ने चिट्ठी उसे दे

उत्तम भविष्य ऐसी वस्तु नहीं है, जिसकी आपको प्रतीक्षा करनी पड़े। अपने भविष्य के निर्माता आप स्वयं हैं। मेहनत कीजिए, भविष्य बनाइए।

दी। बाबू हाथ में पत्र ले पता पढ़कर अत्यन्त चकित हुआ और उसने बच्चों की ओर देखा। बच्चे सारे दिन के भूखे, मुखमलिन, अति दुःखित थे बाबू ने पूछा, "तुम किसके बेटे हो, यह चिट्ठी किसने लिखी है? बच्चों ने कहा, "हम अमुक बेवा के लड़के हैं। हमने नित्य की तरह आज भी माँ से दूध–बताशे मांगे तो उसने कहा,'बेटा! आज तो मैं तुम्हें दूध बताशे नहीं दे पाऊंगी। हम दोनों ने आज कुछ भोजन भी नहीं खाया और घर से भूखे ही दोनों पाठशाला को चल दिये। पाठशाला में आकर हम दोनों ने पिता परमात्मा को यह पत्र लिखा है, जो डालने आये थे।"

बाबू ने पूछा, "तुम जानते हो परमेश्वर कहाँ है?" बच्चे बोले, "माता ने बताया है कि वह ऊपर रहता है।"

बाबू ने पूछा, "क्या हम तुम्हारे इस पत्र को खोलकर पढ़ लें?" बच्चें बोले, "हाँ!"

बाबू ने खोलकर पत्र पढ़ा। बच्चों को दुःखी देख बाबू ने कहा, "तुम दोनों नित्य आधा लीटर दूध और पाव भर बताशे हम से ले जाया करो।"

वृत्त्यर्थ नातिचेष्टेन सा हि धात्रेव निर्मिता
गर्भादुत्पतिते जन्तौ मातु प्रस्त्रवतः स्तनौ।

फल– परमात्मा ने जीव की उत्पत्ति के साथ ही उनकी माँ के स्तनों में दूध दे दिया है। इससे सिद्ध होता है कि परमात्मा सबका पालन हार है।

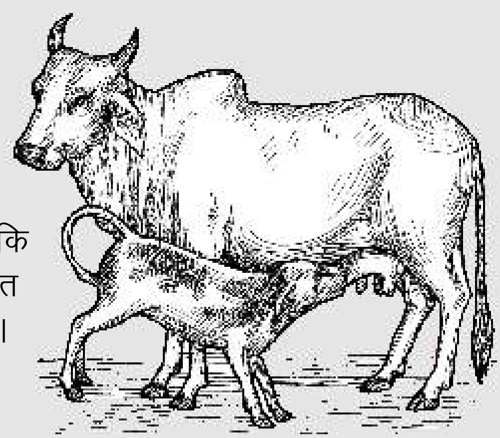

आश्रम द्वारा नव–निर्मित गौशाला में जल की समुचित व्यवस्था करने हेतु तपोभूमि से गौशाला तक पानी की पाईप लाईन डालने का कार्य अति आवश्यक हो गया है। पाईप लाईन डालने पर लगभग 2 लाख रुपए व्यय होने की संभावना है। दान–दाताओं से विनम्र अनुरोध है कि गौमाता के संरक्षण एवं पालन पोषण हेतु निर्मित गौशाला के लिए दान देकर पुण्य के भागी बनें। गौशाला हेतु दिया गया दान आयकर की धारा 80G के अधीन कर मुक्त है। ईश प्रेरणा से गो संरक्षक एवं आश्रम के प्रति समर्पित भाई शिव कुमार जी रॉयल कॉलेज डाकपत्थर के स्वामी ने गौशाला हेतु 11000 रुपये का सात्विक दान दिया है। उनके द्वारा दिये गये सहयोग के लिए तपोवन आश्रम उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता है। आप भी एक गाय के चारे व दाने–चोकर आदि के लिये 5000 रु. प्रतिमाह भेजकर पुण्य के भागी बनें।

अधिक जानकारी हेतु आश्रम के सचिव ई० प्रेमप्रकाश शर्मा, मोबाईल नं. 9412051586 पर सम्पर्क करें।

"अभ्यास" व्यक्ति को "कुशल" नहीं बनाता बल्कि सही अभ्यास व्यक्ति को कुशल बनाता है सही चीजों का अभ्यास करें, गलत का नहीं।

पंचमहायज्ञ

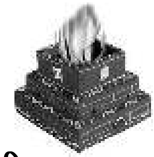

महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

आज आर्य सज्जनों ने फिर अपने मन्दिर में इकट्ठे होकर पंचमहायज्ञ के शब्द को समझाने के लिए महात्माजी से प्रार्थना की है। महात्मा जी ने अब अपना उपदेश आरम्भ किया।

भद्र पुरुषों! आर्य धर्म की विशालता का यह एक लक्षण है कि उसमें मनुष्यों को पढ़नेवाले बालकों के समान समझकर उनके साथ यथायोग्य व्यवहार किया जाए। जितनी समझ का कोई मनुष्य होता है, उससे न्यून बात को सरलता से समझा सकता है; योग्यता से अधिक बात नहीं समझा सकता। बी.ए. श्रेणीवाले की बात मिडलवाले को नहीं समझ आ सकती। सनातन आर्यधर्म के अनुसार विशेष लोग विशेष कर्म अपने–अपने ढंग पर करें। परन्तु ऐसे भी कुछ नित्यकर्म हैं जिन्हें सभी गृहस्थी जन प्रतिदिन किया करें। धनी हो या निर्धन, बड़ा हो या छोटा, सबके लिए आवश्यक होने से ये महायज्ञ कहलाते हैं। महान् वही है जिसमें अभिमान नहीं हो सकता, और जब जिस कर्म को राजा ने किया और रंक ने कर लिया तो वह स्वयमेव महान् हो गया।

जरा रहस्य की बात भी सुनो! बीज बड़ा कि वृक्ष? बीज है तो नन्हा, परन्तु कारण है वृक्ष का, जो लम्बा– चौड़ा, ऊँचा–नीचा होता है, इसलिए जिससे सबकी उत्पत्ति हो वही होता है महान्। ये पञ्चमहायज्ञ नित्यकर्म होने से, सबका अधिकार सबके लिए आवश्यक होने से और सबका बीज होने से महान हैं। अब जरा ध्यान से सुनों! मैं विस्तार से समझाता हूँ। महात्मा गांधी का काम इसी में आ जाएगा। महात्मा गाँधी जो काम करते हैं वह इसी बीज से पैदा हुआ है।

'ब्रह्मयज्ञ' क्यों महायज्ञ है? ब्रह्मयज्ञ में महान् प्रभु का ध्यान कर साधक महान् बनना चाहता है, क्योंकि जिस प्रकार के संकल्पमय आदर्श हमारे सम्मुख होते हैं हम वैसे ही ढलते जाते हैं, इसलिए साधक ब्रह्मयज्ञ में विशेष रूप से प्रभु के आन्तरिक प्रकाश को देखने के लिए उत्सुक होकर अन्तर्मुख होने का अभ्यास करता है।

देवयज्ञ

देवयज्ञ में वह भौतिक देवताओं में प्रभु की ज्योति को अनुभव करता हुआ उनके समान उपकारी बनने का यत्न करता है। उसकी (प्रभु की) बाह्य विभूतियों और चमत्कारों का ध्यान करता हुआ उसके विराट् स्वरूप का चिन्तन करता है। प्रत्येक भौतिक देवता में प्रभु के प्रकाश की रेखा को देखने का अभ्यास करता है। प्रतिक्षण उसके रचे यज्ञ का चिन्तन करता हुआ अपने अन्दर से स्वार्थ तथा तुच्छता के बीजों और अंकुरों को बाहर उखाड़ फेंकने का प्रयत्न करता रहता है। एक प्रकार से देवयज्ञ सारे छोटे–बड़े यज्ञों का बोधक है।

देवयज्ञ एक प्रकार का प्रायश्चित–कर्म है। वायु की शुद्धि तो होगी घी, सामग्री और समिधा से, परन्तु लक्ष्य तो आन्तरिक

सफलता महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने से नहीं मिलती, बल्कि महत्त्वपूर्ण निर्णय पर शीघ्र आचरण करने से मिलती है।

चित्त–शुद्धि का है। जिस प्रायश्चित–कर्म से चित्त की शुद्धि नहीं होती, वह कर्म पूरा नही होता।

अन्तःकरण की शुद्धि कैसे हो? अन्तःकरण चार भागों में विभक्त है– मन, चित्त, बुद्धि और अहंकार। मन की शुद्धि श्रद्धा से, बुद्धि की विश्वास से, चित्त की तप से, और अहंकार की शुद्धि त्याग से होगी, और इन सबका साधन ज्ञान, कर्म और उपासना है। बुद्धि में विश्वास बिना ज्ञान नहीं टिक सकता। त्याग और तप कर्म में ही होता है और मन में श्रद्धा–भक्ति न हो तो कर्म हो नहीं सकता, इसलिए यज्ञकर्म ही अन्तःकरण की शुद्धि का एकमात्र साधन है।

पितृयज्ञ

यह पारिवारिक एकता का बढ़ानेवाला है। प्रतिदिन अपने माता–पिता, गुरु और आश्रित सम्बन्धियों की सेवा तथा तृप्ति का ठीक–ठीक प्रबन्ध करना इस यज्ञ का तात्पर्य है। इस यज्ञ की महत्ता इसलिए है कि माता–पिता बिना किसी प्रतिफल के भाव से अपनी सन्तान की रक्षा, पालन–पोषण, त्यागभाव से तथा प्रेम और स्नेह रस से करते हैं। उनका अंग–अंग सन्तान के लिए प्रेम का स्त्रोत होता है। उनका ऋण चुकाना सन्तान के लिए असम्भव है। इसलिए कि जो संतान के लिए बिना कामना के अपना कर्तव्य समझकर अपना सब कुछ न्यौछावर करते हैं और जिन अंगों को माता–पिता ने प्रेम से सींचा है, उन अंगों की कमाई को प्रेम के स्त्रोत की सेवा में लगावें। आर्यधर्म में कुल की मर्यादा की रक्षा करना धर्म का अंग माना गया है। यह तभी हो सकता है जब वृद्ध माता–पिता के प्रति सन्तान अपने कर्तव्य का पालन करें।

अतिथियज्ञ

यह जातीय प्रेम तथा संगठन का अभ्यास– क्षेत्र है। यह चौथा महायज्ञ वहीं हो सकता है जहाँ पितृयज्ञ की प्रतिष्ठा हो । जब कोई विद्वान्, सदाचारी, सन्यासी, महात्मा, अनुभवी सज्जन हमारे यहाँ आ पहुँचे तो हमारा द्वार उसके स्वागत के लिए सदा खुला रहना चाहिए। वेदादि शास्त्रों में ऐसे ही अतिथियों का वर्णन किया गया है। अपने इष्ट–मित्र तथा सम्बन्धी–वर्ग की सेवा करना अतिथियज्ञ नहीं हो सकता। वे तो अपने–अपने अधिकार से सेवा करा लेते हैं और वह कुल–मर्यादा की रक्षा–निमित्त पितृयज्ञ में गिना जाता है। अतिथि महात्मा तो सामाजिक मर्यादा की रक्षार्थ प्रचार करते घूमते रहते हैं।

भूतयज्ञ

अन्त में सब संकोच का त्याग सिखाने के लिए भूतयज्ञ है। जैसे ब्रह्म सबके हृदय में निवास करता है, ऐसे ही साधक भी प्राणिमात्र के हृदय में प्रविष्ट होकर उसी ब्रह्म का अनुभव करता है। किसी के हृदय में निवास करना हो तो उसके साथ सच्चा प्रेम और उसकी सदा सहायता करो। जब घर में भोजन तैयार हो तो अपने–आप ही न खा जाया करो। कोई रोगी, कुष्ठी, पंगु, कंगाल द्वार पर खड़ा हो या भूखा पास हो, किसी अन्नदाता की प्रतीक्षा करता हो, तो जाओ प्रथम उसका पेट भरो। इसी प्रकार कुत्ता, बिल्ली, चिड़िया, कौआ आदि प्राणियों का पालन करो। आर्य–जाति में इस पवित्र धर्म का अंकुर अभी तक विद्यमान है। लाहौर में मैने देखा कई भले पुरुष कुत्तों को बाहर रोटियाँ डाला करते हैं, कौओं को ज्वार, मक्की की फुलियाँ, कीड़ों–मकोड़ों को तिल–शक्कर। सिन्ध देश में मैंने देखा कि नदी और समुद्र में मछलियों को आटे की गोलियाँ बनाकर डालते

हैं। मण्डियों में पक्षियों के लिए छोटा अनाज डालते हैं। कहीं बड़े–बड़े नमक के ढेले पशुओं, गौओं, भैसों आदि के मार्ग में रख छोड़ते हैं। कहीं घास बिखेर डालते हैं। यह प्रथा न केवल लाहौर, कराची में है बल्कि हिन्दू आबादी की हर जगह पर ऐसा रिवाज है। सभी नहीं, परन्तु कोई–न–कोई दयावान् ऐसे काम करता ही रहता है। अब समय के प्रभाव से यह रिवाज़ विरले आदमियों के भाग्य में रह गया है; आम घटता जा रहा है। यह धर्म, जातीय समृद्धि और ऐश्वर्य का एक चिह्न था। मनु भगवान् कहते हैं–

ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।
नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्ति न हापयेत्।।

(4/21)

यथाशक्ति, जहाँ तक हो सके, ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ, अतिथियज्ञ और पितृयज्ञ को न छोड़े।

अहन्यहनि ये त्वेतानकृत्वा भुञ्जते स्वयम्।
केवलं मलमश्नन्ति ते नरा न च संशयः।।

(महाभारत 104/16)

अर्थात् प्रतिदिन जो इन महायज्ञों को किये बिना खाते–पीते हैं, वे नर केवल मल खाते हैं, वस्तुतः इसमें संशय नहीं।

जब आप लोग यज्ञकुण्ड में अग्नि धरने के लिए अभी केवल कपूर या बत्ती को अग्नि से जगाते ही हो तो तुरन्त उसी क्षण 'ओं भूर्भुव– स्वः' कहते हो और फिर सारा मंत्र पढ़कर अग्निकुण्ड के मध्य में, तलदेश में धरते हो। अगर आप कभी इस ओर ध्यान दो तो आपको पता लग जाए कि इस कुण्ड की रचना का, और मन्त्र का क्या आशय है। यजमान अपने मुख से वेद की यह ऋचा पढ़कर अपने लिए किसी बड़ी महत्ता को प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करता है। वह क्या बनना चाहता है?– कुण्ड के आकार से प्रकट है कि तल बिल्कुल छोटा हो। ज्यो–ज्यों ऊपर बढ़ता है चौड़ा होता जाता है और अन्त में बिल्कुल विशाल हो जाता है। यह नीचे का तल भू लोक है। यजमान जब थोड़ी–सी अग्नि भूमि के तल पर रखता है तो –'भूर्भुव– स्वः' से बतला रहा है कि हे प्रभो! जिस प्रकार यह अग्नि अपनी यज्ञकर्म भूः से स्वः लोक तक विस्तृत हो जाय, भूः से स्वः तक के प्राणियों को पहुँचा दो, मेरा सब भूतों में निवास हो जाय। कितना महान त्याग और महान् उत्तम भाव है!

अब अर्थ भी सुन लो! हे पृथिवि! (देवयजनि) जिस पर देवता नित्य यज्ञ करते हैं और जहाँ उनकी पूजा होती है (तस्याः) इस प्रकार की (ते) तेरी (पृष्ठे) पीठ पर (अन्नाद्याय) भक्षण योग्य अन्न के लिए (अन्नादम्) सर्वभक्षक (अग्निम्) अग्नि को (आदधे) रखता हूँ, ताकि मैं (भू) भूलोक (भुवः) अन्तरिक्षलोक (स्वः) स्वःलोक के रस–रूप गुणों को धारण कर सकूँ। (भूम्ना) बड़ाई में (द्यौः इव) नक्षत्र आदि की महिमा से महान्, देवलोक के समान तथा (वरिम्णा) विस्तार में (पृथिवी इव) पृथिवी के समान सब प्राणियों का आश्रय बन सकूँ।

शरदोत्सव 2015

दिनांक 7–10–2015 से 11–10–2015 तक

आमंत्रित विद्वान – पंडित उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ, आगरा

भजनोपदेशक – पंडित रुवेल सिंह आर्यवीर

शरदोत्सव में आप सभी आमंत्रित हैं। अपने आने की सूचना आश्रम के दूरभाष पर देने की कृपा करें।

बुद्धि सर्वश्रेष्ठ है

त्वं नो मेधे प्रथमा। अथर्व. 6, 108, 1
हे बुद्धि! तू हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ वस्तु है।

एक बार बुद्धि और भाग्य में झगड़ा हो गया। बुद्धि कहने लगी मैं बड़ी और भाग्य कहता था कि मैं बड़ा। बुद्धि ने भाग्य से कहा– 'यदि तू बड़ा है, तो यह गडरिया जो वन में भेड़ें चरा रहा है। इसे बिना मेरी सहायता के तू बादशाह बना दे, तो मैं मान लूँगी कि तू बड़ा है।" यह सुनकर भाग्य ने उसको बादशाह बनाने का प्रयत्न प्रारंभ किया।

भाग्य ने एक बहुमूल्य खड़ाऊ का जोड़ा, जिसमें लाखों रुपये के जवाहरात जड़ें हुए थे, लाकर गडरिये के आगे रख दिया। गडरिया उसको पहिन कर चलने लगा। फिर भाग्य ने एक सौदागर को वहाँ पहुँचा दिया। सौदागर उन खड़ाऊंओं को देख कर चकित हो गया और गडरियें से बोला, तुम यह खड़ाऊं का जोड़ा बेचोगे? गडरिये ने कहा 'ले लो।' सौदागर ने कहा– "क्या दाम लोगे?" गडरिये ने कहा– दाम क्या बताऊं? मुझे रोटी खाने के लिए रोज गांव जाना पड़ता है, अगर तुम दो मन भुने चने इस खड़ाऊ के जोड़े की कीमत दे दो, तो मैं चना चबाकर भेड़ों का दूध पी लिया करूंगा और गांव में जाने के दुःख से छूट जाऊंगा।" अभिप्राय यह कि इस दुबुद्धि गडरिये ने ऐसी बहुमूल्य खड़ाऊ जिसमें एक–एक हीरा लाखों रुपए का था, दो मन भुने चनों में बेच डाली।

यह देखकर भाग्य ने और बल दिया। उस सौदागर को एक राजा के दरबार में पहुँचा दिया। जिस समय वहां सौदागर ने खड़ाऊं बादशाह के आगे रक्खीं, बादशाह देखकर चकित हो गया और उसने सौदागर से पूछा– तुमने यह खड़ाऊं का जोड़ा कहां से लिया?" सौदागर ने जवाब दिया एक बादशाह मेरा मित्र है, उसने ये खड़ाऊं मुझे दी हैं।" बादशाह ने पूछा– "क्या उस बादशाह के पास ऐसी और खड़ाऊं हैं," सौदागर ने उत्तर दिया– "हां हैं।" बादशाह ने पूछा– क्या उस बादशाह के कोई लड़का भी है?" सौदागर ने कहा– हां उसके लड़का भी है।" यह सुनकर बादशाह ने कहा–– "जनाब, मेरी लड़की की सगाई उस बादशाह के लड़के से करा दो,"

यह सब बातें तो भाग्य के बल से हुई, परन्तु सौदागर को बादशाह की पिछली बात सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि उसे ज्ञात था कि खड़ाऊ की जोड़ी तो मैंने गडरिये से ली हैं, न कोई बादशाह है, न बादशाह का लड़का, परन्तु इस झूठ बात के मुंह से निकल जाने से उसने सोचा कि अगर इस समय मैं अपने झूठ का भेद खोलता हूँ, तो बादशाह न जाने क्या दण्ड देवेगा। यह ख्याल कर उसने विचार किया कि जिस तरह हो सके, बादशाह के शहर से निकल चलना चाहिए। अतः उसने बादशाह से कहा– "मैं आपकी लड़की की सगाई करने को जाता हूँ।" यह कहकर जिस ओर से वह आया था, उसी ओर को पुनः रवाना हुआ।

विजय केवल अंत में ही नहीं होती, वह तो प्रत्येक कदम पर होती है।
पूरे मनोयोग से अपना पुरुषार्थ जारी रखें। विजय निश्चित है।

जब वह उस स्थान पर पहुंचा, जहां उसने गडरिये को देखा था। वहां पहुंच कर सौदागर ने देखा कि वह गडरिया उससे विशेष मूल्य की खड़ाऊ का जोड़ा पहिन रहा है। सौदागर यह देखकर हैरान हो गया। उसने सोचा कि यह कोई सिद्ध पुरुष है, उसने सोचा कि यहां ठहर कर इसका हाल मालूम करना चाहिए। यह सोचकर उसने वहाँ डेरे लगा दिये और उसके पास तांबा, जो लदा हुआ था, उसे उतार कर एक वृक्ष के नीचे रख दिया एक ओर। जब दोपहर हुआ, तो गडरिया धूप से बचने के लिए उस वृक्ष के नीचे जहां तांबे का ढेर पड़ा हुआ था। वह उस ढ़ेर के सहारे अपना सिर लगाकर सो गया। उसका तांबे पर सिर लगाने से भाग्य ने तांबे को सोना बना दिया।

जब सौदागर ने यह देखा, तब उसे ख्याल आया कि जिस मनुष्य के सिर लगाने से ताम्बा सोना हो जाता है, उसको बादशाह बनाना कोन बड़ी बात है। यह सोचकर सौदागर ने कुछ गांव मोल ले लिए और उन गांवों में दुर्ग बनाना प्रारम्भ कर दिया और कुछ सेना भी रख ली। जब सब सामान तैयार हो गया, तब उस गडरिये को पकड़कर दुर्ग में ले गया और उसे अच्छे बादशाही कपड़े पहना कर मंत्री, सेवक आदि सभी रख लिये। फिर उस बादशाह को चिट्ठी लिखी– "हमारे बादशाह ने आपकी लड़की की सगाई स्वीकार कर ली है। जो तिथि आप नियत करें, बारात उसी दिन पहुंच जायेंगी।" बादशाह ने तिथि नियत कर लिख भेजा।

इधर शादी की तैयारी होने लगी। एक दिन जब दरबार लगा हुआ था, सारे मंत्री आदि बैठे हुए थे गडरिया बादशाही तख्त पर तकिया लगाए बादशाह बना बैठा था, उस समय गडरिये ने सौदागर से कहा––"तुम मुझे छोड़ दो, देखो मेरी भेड़ें किसी के खेत में चली जायेंगी, तो वह मुझे पीटेगा।" यह सुन कर सब लोग हंस पड़े और सौदागर मन में सोचने लगा, इसका क्या इलाज किया जाये। जो कहीं उस बादशाह से इसने ऐसा कह दिया, तो मैं बिना प्रयोजन मारा जाऊंगा। पुनः सौदागर ने उस गडरिये से कहा– "अगर तुम फिर कभी ऐसे शब्द बोलोगे, तो मैं तुम्हें तलवार से मार दूंगा। जो कुछ कहना हो मेरे कान में कहना।

निदान ब्याह की तिथि समीप आ गई। सौदागर बारात लेकर रवाना हुआ और बादशाह के शहर के समीप पहुंच गया। उधर से बादशाह का मंत्री बहुत से कामदारों को अपने साथ लेकर और सेना सहित अगवानी में आया तो उन्हें देखकर गडरिये को ख्याल आया कि शायद मेरी भेड़ें उनके खेत में चली गई और ये मुझे पकड़ने को आये हैं। परन्तु बात कान में कहे जाने के कारण किसी को न विदित हुई और लोगों ने सौदागर ने पूछा – "शाहजादे साहब क्या कहते हैं?" सौदागर ने जवाब दिया जितने मनुष्य अगवानी में आये हैं, इन सबको पांच–पांच लाख रुपया दिया जाये।" सबको पांच–पांच लाख रुपया दिया गया।

शहर में प्रसिद्ध हो गया कि बड़े भारी बादशाह का लड़का ब्याह के लिये आया है, जो प्रत्येक पुरुष को लाखों रुपये ईनाम देता है, सैकड़ों–हजारों का नाम ही नहीं जानता। बादशाह भी डरा कि मैंने बड़े भारी बादशाह से सम्बन्ध जोड़ लिया है, परमेश्वर प्रतिष्ठा रखे। उस गडरिये का ब्याह बादशाह की लड़की से हो गया।

हो सकता है कि मैं सबके लिए पूरा आदर्श न बन पाऊं, परंतु जो मुझसे आशा रखते हैं, उनके लिए आदर्श बनने का प्रयत्न तो कर सकता हूँ।

यहां तक तो बुद्धिमान सौदागर के सिलसिले से भाग्यकृत कार्य हुआ, परन्तु जब रात को गडरिया अकेला बादशाही महल में सोया और वहाँ झाड़– फानूस और लैम्प–बल्ब आदि जलते देखे, तो इसको ख्याल आया कि जंगल में जो भूतों की आग सुनी जाती थी, वह यही है। मैं इससे जल कर मर जाऊंगा। वह गडरिया यह सोच ही रहा था कि इतने में बादशाह की लड़की गडरिये के कमरे में आई जब इसने जेवरों की आवाज सुनी, तो उसे ख्याल आया कि कोई चुड़ैल मेरे मारने वास्ते आ रही है। यह सोचकर झटपट एक दरवाजे की आड़ में छिप गया। शाहजादी ने देखा कि शाहजादा यहां नहीं है, वह दूसरे कमरे में चली गई। उसके जाते ही इसे ख्याल आया कि चुडैल से अब तो बच गया हूँ, न मालूम यहां कितनी और चुड़ैले आयें, इसलिए यहां से भाग जाना चाहिए। यह सोच ही रहा था कि उसे एक जीना ऊपर की आरे दीख पड़ा। वह झट उस पर चढ़ गया और उसने एक तरफ छज्जे से हाथ डालकर नीचे कूदकर भागने का इरादा किया। उस समय बुद्धि ने भाग्य से कहा– "देख, तेरे बनाने से यह बादशाह न बन कर अब गिरकर मरेगा।"

इसलिए कहा है कि बुद्धि सर्वश्रेष्ठ है। बिना बुद्धि के भाग्य से कार्य नहीं चलता। अत– सर्वदा मनुष्य को बुद्धि से काम लेना चाहिए।

सूचना

पवमान पत्रिका के सुविज्ञ पाठको को सूचित किया जाता है कि सितम्बर 2014 से पत्रिका का वार्षिक मूल्य 150 रुपये हो गया है। जिन ग्राहकों ने पत्रिका शुल्क जमा नहीं किया है वह पिछले वर्षों सहित इस वर्ष का शुल्क शीघ्र जमा कर दें। यह अन्तिम अनुरोध है अगले माह की पवमान पत्रिका केवल उन्हीं ग्राहकों को भेजी जाएगी जिनके द्वारा पत्रिका का शुल्क जमा कर दिया गया हो। आप कैनरा बैंक, क्लाक टावर, देहरादून (IFSC code : CNRB0002162) खाता 'पवमान' खाता सं. 2162101021169 में शुल्क जमा करा सकते हैं। आश्रम के दूरभाष नं. 0135–2787001 पर सूचना प्राप्त होने पर आपके द्वारा जमा शुल्क की रसीद आपके पते पर भेज दी जायेगी। पत्रिका प्राप्त न होने पर इसकी सूचना आश्रम के ईमेल : vaidicsadanashram88@gmail.com अथवा श्री रमाकान्त कौशिक, मोबाईल नं. 8171619653 एवं श्री विनीत सचदेवा, मोबाईल नं. 9528033205 पर एसएमएस भेजने पर पत्रिका आपको पुनः भेज दी जाएगी। सूचनीय है कि पवमान पत्रिका के प्रकाशन पर प्रति माह लगभग 10 हजार रुपए की हानि हो रही है। आप समय पर पत्रिका का शुल्क जमा करके तथा विज्ञापन देकर इस हानि को कम कर सकते हैं। विज्ञापन के रेट प्रथम पृष्ठ पर दिये गये हैं।

श्रद्धांजलि

बड़े दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि तपोवन आश्रम निवासी माता ओमवती जी का दिनांक 29 जून 2015 को प्रातः 6.30 बजे आकस्मिक निधन हो गया है। आश्रम में उपस्थित सभी आश्रमवासियों ने उन्हें सामूहिक रूप से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। वह अति मृदुभाषी, सरल स्वभाव तथा यज्ञ के प्रति समर्पित देवी थी। आश्रम के प्रत्येक कार्यक्रमों में वह बढ़–चढ़कर योगदान करती थी तथा यथा सामर्थ्य दान भी देती थी। उनके निधन से तपोवन आश्रम को अभूतपूर्व क्षति हुई है। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि अपनी न्याय व्यवस्था के अनुसार दिवंगत आत्मा को मोक्ष मार्गी बनायें तथा उनके परिवारजनों को इस गहन दुख को सहन करने की सामर्थ्य दें।

स्वस्थ जीवन के लिये धारण करने योग्य 51 बातें

श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार

1. रोज प्रातः काल सूर्योदय से पहले उठो। उठते ही भगवान् को प्रणाम करो, फिर हाथ–मुँह धोकर उषः पान करो। ठंडे जल से आँखें धोओ।
2. पेशाब– पाखाने की हाजत को कभी न रोको। पेट में मल जमा न होने दो।
3. रोज दतुअन करो; भोजन करके हाथ, मुँह, दाँत अवश्य धोओ।
4. प्रतिदिन प्रातःकाल स्नान करके सूर्य को अर्घ्य दो।
5. दोनों समय (प्रातः और संध्या) नियमपूर्वक श्रद्धा के साथ भगवत्प्रार्थना या संध्या करो।
6. हो सके तो प्रातः काल शुद्ध वायु का सेवन अवश्य करो।
7. भूख से अधिक न खाओ, जीभ के स्वाद के वश में न होओ; पवित्रता से बना हुआ– पवित्र कमाई का अन्न खाओं; किसी का भी जूठा कभी न खाओ, न किसी को अपना जूठा खिलाओ, मांस –मद्य का सेवन कभी न करो।
8. भोजन के समय जल न पीओ या बहुत थोड़ा पीओ।
9. पान, तंबाकू, सिगरेट, बीड़ी, चाय, काफी, भाँग, अफीम, गाँजा, चरस, ताश, चौपड़, शतरंज आदि का व्यसन न डालो; दवा अधिक सेवन न करो। पथ्य, परहेज, संयम, युक्ताहार, विहार का अधिक ध्यान रखो।
10. दिन में न सोओ, रात में अधिक न जागो, छः घंटे से अधिक न सोओ।
11. नियमित रूप से धर्मग्रन्थों का कुछ स्वाध्याय अवश्य करो।
12. रोज नियमित रूप से कम–से–कम 24,000 भगवान् के नाम (ओ३म) का जप अवश्य करो।
13. संतों के चरित्र और उनकी दिव्य वाणी का अध्ययन करो।
14. जुआ कभी न खेलो, बाजी न लगाओ, होड़ न बदो।
15. सिनेमा, स्त्रियों का नाच आदि न देखो।
16. कपड़े सादे पहनो और साफ रखो, मैले न होने दो; परन्तु फैशन का ख्याल बिलकुल न रखो। कपड़े बिगाड़कर भी न पहनो, बहुत कीमती कपड़े न पहनो।
17. हजामत और नख न बढ़ने दो, परंतु शौक से दिन में दो बार बनाओं भी नहीं।
18. अपने शरीर को सुन्दर दिखलाने का प्रयत्न न करो।
19. किसी भी हालत में यथासाध्य उधार न लो, उधार लेकर खर्च करने से आदत बिगड़ जाती है; जबतक उधार मिलता है, खर्च बढ़ता ही जाता है; पीछे बड़ी कठिनाई और बेइज्जती होती है।
20. तकलीफ सहकर भी आमदनी से कम खर्च करो, अधिक खर्च करनेवालों या अमीरों को आदर्श न मानकर मितव्ययी पुरुषों और गरीबों की ओर ध्यान दो। मितव्ययी पुरुष आमदनी में से कुछ बचाकर अपनी ताकत के अनुसार दुःखियों की सेवा कर सकता है, चाहे एक पैसे से ही हो; खरी कमाई से बचे हुए एक पैसे के द्वारा भी की हुई दीन–सेवा बहुत महत्त्व की होती है। मितव्ययी पुरुष के बचाये हुए पैसे उसके आड़े वक्त पर काम आते हैं। जो अधिक खर्च करता है, उसकी आदत इतनी बिगड़ जाती है कि वह बहुत अधिक आमदनी होने पर भी एक पैसा बचाकर दीनों की सेवा नहीं कर सकता। वह अपने खर्च से ही परेशान रहता है और आमदनी न होने या कम होने की सूरत में उस पर कष्टों का पहाड़ टूट पड़ता है। मितव्ययी और अच्छी आदत वाले पुरुष ऐसी अवस्था में दुःखी नहीं हुआ करते।
21. नौकरों से दुव्यवहार न करो, दुःख में उनकी सेवा–सहायता करो। उनका तिरस्कार–अपमान कभी न करो। उनकी आवश्यकताओं का ख्याल रखो और अपनी परिस्थिति के अनुसार उन्हें पूरा करने की चेष्टा करो।
22. अपरिचित मनुष्य से दवा न लो, जादू–टोना किसी से भी न करवाओ।
23. नोट दूना बनाने वाले, आँकड़ा बताने वाले, सोना बनाने वाले, सट्टा बतलाने वाले लोगों से सावधान रहो; ऐसा करने वाले प्रायः ठग होते हैं।
24. किसी अनजान को पेट की बात न कहो जाते हुए भी सबसे न कहो; परन्तु अपने सच्चे हितैषी बन्धु से छिपाओ भी नहीं।
25. जहाँ भी रहा किसी वयोवृद्ध अनुभवी मनुष्य को

अपना हितैषी जरूर बना लो। विपत्ति के समय उसकी सलाह बहुत काम देगी।

26. प्रेम सबसे रखो, परंतु बहुत ज्यादा सम्बन्ध स्थापित न करो। अनावश्यक दावतों में न जाओ और न दावत देने की ही आदत डालो।

27. जो कुछ काम करो, अच्छी तरह से करो। बिगाड़कर जल्दी और ज्यादा करने की अपेक्षा सुधारकर थोड़ा करना भी अच्छा है, परंतु आलस्य–प्रमाद को समीप न आने दो।

28. जोश में आकर कोई काम न करो।

29. किसी से विवाद या तर्क न करो, शास्त्रार्थ न करो। अपने को सदा विद्यार्थी ही समझो। समझदारी का अभिमान न करो। सीखने की धुन रखो।

30. मीठा बोलो, ताना न मारो, कड़वी जबान न कहो, बीच न बोलो, बिना पूछे सलाह न दो; सच बोलो, अधिक न बोलो, बिलकुल मौन भी न रहो; हँसी– मजाक न करो; निन्दा–चुगली न सुनो; गाली न दो, शाप– वरदान न दो।

31. नम्र और विनयशील रहो, झूठी चापलूसी न करो, ऐंठो नहीं, मान दो, पर मान न चाहो।

32. दूसरे के द्वारा अच्छे बर्ताव होने पर ही मैं उसके साथ अच्छा करूँगा पहले से ही सबसे अच्छा बर्ताव करो, जो अपनी बुराई करे उसके साथ भी।

33. गरीबों के साथ सहानुभूति रखो।

34. किसी फर्म में, संस्था में या किसी व्यक्ति के लिये काम करो– नौकरी करो तो पूरी वफादारी से करो। सदा तन–मन–वचन से उसका हित–चिन्तन ही करते रहो।

35. जहाँ रहो अपनी ईमानदारी, वफादारी, होशियारी, कार्य–कुशलता, मीठे वचन, परिश्रम और ऊँचाई से अपनी जरूरत पैदा कर दो। अपना स्थान स्वयं बना लो।

36. प्रत्यक्ष लाभ दीखने पर भी अनुचित लोभ न करो। अपनी ईमानदारी को हर हालात में बचाये रखो। दूसरे का हक किसी तरह भी स्वीकार न करो। ईमान न बिगाड़ो।

37. आचरणों को– चरित्र को सदा पवित्र बनाये रखने की कोशिश करो।

38. बिना ही कारण मान–बड़ाई के लिये न तरसो। गरीबी से न डरो, बेईमानी और बुरी आदतों से अवश्य भय करो।

39. परायी स्त्री को जलती हुई आग या सिंह से भी अधिक समझो। स्त्री–सम्बन्धी चर्चा न करो, स्त्री–चिन्तन न करो, स्त्रियों के चित्र न देखो, स्त्रियों के सम्बन्ध की पुस्तकें न पढ़ो। यथासाध्य स्त्री सहवास अपनी स्त्री से भी कम करो। यही बात स्त्री के लिये पर–पुरुष के सम्बन्ध में है।

40. सदा अशुभ भावनाओं से अपने को न घिरा रहने दो। उनको दूर भगाये रखो।

41. विपत्ति में धैर्य और सत्य को न छोड़ों, दूसरे पर दोष न दो।

42. जहाँ तक हो क्रोध न आने दो। क्रोध आ जाय तो उसका कुछ प्रायश्चित करो।

43. दूसरों के दोष न देखो, किसी को छोटा न समझो। अपना दोष स्वीकार करने को सदा तैयार रहो।

44. अपने दोषों की डायरी रखो; रात को उसे रोज देखो और कल ये दोष नहीं होंगे, ऐसा दृढ़ निश्चय करो।

45. वासनाओं को जीतने की चेष्टा करो। कामनापूर्ति की अपेक्षा कामनाओं को जीतने में ही सुख है।

46. अहिंसा, सत्य और दया को विशेष बढ़ाओ।

47. जीवन का प्रधान लक्ष्य एक ही है, यह दृढ़ निश्चय कर लो। वह लक्ष्य है– 'भगवान् की उपलब्धि।'

48. विषयचिन्तन, अशुभचिन्तन का त्याग करके यथासाध्य भगवच्चिन्तन का अभ्यास करो।

49. भगवान् जो कुछ दें, उसी को आनन्दपूर्वक ग्रहण करने का अभ्यास करो।

50. इज्ज्त, मान और नाम का मोह न करो।

51. भगवान् की कृपा में विश्वास करो।

विनम्र निवेदन

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून में पधारने वाले सभी भाई–बहनों से अनुरोध है कि वह अपने साथ आधार कार्ड / वोटर कार्ड की फोटोकॉपी अथवा आर्य समाज के प्रधान या मंत्री का पत्र लेकर आएं ताकि उन्हें आश्रम में उचित कमरे का आवंटन किया जा सके। प्रयास करें कि आश्रम में आने से पूर्व आश्रम के दूरभाष नं. 0135–2787001 पर सम्पर्क कर लें ताकि खाली कमरों की वास्तविक स्थिति का पता लग सके।

वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर (प्रथम स्तर)
(20 सितम्बर से 27 सितम्बर 2015)
आयोजक : वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून

यदि आप सत्य, सनातन वैदिक सिद्धान्त को आत्मसात् कर वैदिक साधना पद्धति के शुद्ध स्वरूप को प्रायोगिक स्तर पर समझकर स्वयं तथा ईश्वर की यथार्थ, निर्भ्रान्त अनुभूतियों को स्पर्श करना चाहते हों तो आपका वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी देहरादून में 20 सितम्बर सायंकाल से प्रारम्भ होकर 27 सितम्बर प्रातः को समाप्त होने वाले वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर प्रथम स्तर में भाग लेना सार्थक हो सकता है।

यह शिविर आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य के मार्गदर्शन में होगा। इस शिविर में वैदिक योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण तथा योग्यता व पात्रतानुसार शंका समाधानपूर्वक साधना हेतू मार्गदर्शन दिया जायेगा। समस्त दैनिक व्यवहार में मन को चिन्ता, तनाव से रहित कर शान्त व समता में बनाये रखना किस प्रकार से सम्भव हो सकता है, इसका प्रशिक्षण भी इसके अन्तर्गत होगा।

(क) यह शिविर आवासीय है। शिविर में महिलाओं व पुरुषों की निवास व्यवस्था पृथक–पृथक होती है।

(ख) सम्पूर्ण शिविर मे विधिवत् भाग लेने के इच्छुक सज्जन ही आवेदन हेतू सम्पर्क करें। शिविर समापन से पूर्व वापिस जाना सम्भव नही हो सकेगा तथा 20 सितम्बर सायंकाल 5:00 बजे के बाद प्रवेश नही दिया जायेगा। इस कष्ट हेतु हम पूर्व से ही क्षमा प्रार्थी है।

(ग) प्रथम स्तर के शिविरों में भाग लेने वाले साधक ही आगे गम्भीर साधना के शिविरों में भाग ले सकेंगे।

(घ) शिविर में अधिकाधिक 70 साधक साधिकाओं की ही व्यवस्था सम्भव है। अतः इच्छुक जन पूर्व ही अपना स्थान सुरक्षित करा लें। पुराने शिविरार्थी नवीन जिज्ञासुओं को अवसर व प्रोत्साहन देकर सहयोग प्रदान कर सकते है।

(ङ) स्थान आरक्षण व अन्य जानकारी हेतु इन महानुभावों से सम्पर्क करें :–1श्री नन्द किशोर अरोड़ा जी, दिल्ली, (मो०नं०–09310444170) समय दिन में 10:30 बजे से सायं 4:00 बजे तक, एवं रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक, 2.श्री यश वर्मा जी, यमुना नगर, मो0 09416446305 समय प्रातः 10.00 से सांय 5.00 बजे तक, 3.श्री विजेश गर्ग जी मो0 09410315022 10:00 बजे से सायं 4:00 बजे।

(च) अपनी वापसी का आरक्षण पूर्व ही करा कर आयें। शिविर के मध्य अग्रिम यात्रा हेतु आरक्षण करवाने की सुविधा हमारे पास नही है।

(छ) शिविर में भाग लेने की न्यूनतम आयु सीमा 17 वर्ष है। अपने साथ संचिका, पेन, टार्च व फल काटने हेतु चाकू अवश्य लायें।

(झ) **शुल्क–इस ईश्वरीय कार्य में श्रद्धा व भावनापूर्वक स्वैच्छिक सहयोग करना सभी प्रतिभागियों के लिये अनिवार्य है।**

(स) आवश्यकता होने पर **आचार्य आशीष जी (मो०नं०–09410506701)** से रात्रि 8.00 बजे से 9.00 बजे के मध्य सम्पर्क कर सकते है।

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री	**ई० प्रेम प्रकाश शर्मा**	**सन्तोष रहेजा**
अध्यक्ष	सचिव	उपाध्यक्षा
मो. 9810033799	मो. 9412051586	9910720157

वैदिक साधन आश्रम तपोवन को दान देने वाले में दानदाताओं की सूची

क्र.स.	नाम	धनराशि
1.	श्रीमती सत्या वाधवा जी	5100
2.	चुग परिवार	8500
3.	श्रीमती पदमा गुलाटी	1100
4.	स्मृति राय एवं हुकुम चन्द	5000
5.	श्री संजीव चड्‌ढा जी	5100
6.	श्री विजयपाल सिंह	501
7.	डा० गुलशन लाल बग्गा आर्य	352
8.	कु० आराध्या जी	501
9.	श्री जगन्नाथ प्रसाद जी	500
10.	श्री कमलेश जीवन लाल आर्य	500
11.	श्रीमती निर्मला गुप्ता	500
12.	श्रीमती सुदेश धवन जी	2100
13.	श्रीमती मधु छावड़ा जी	1100
14.	श्री धर्मवीर गुप्ता जी	2100
15.	श्री हकीकत राय नन्दा जी	1100
16.	श्री रणजीत राय कपूर	1100
17.	श्री आदर्श रस्तोगी जी	2100
18.	श्री ज्ञान चन्द अरोड़ा जी	4000
19.	श्री विक्रम सिंह जी	500
20.	श्री मनजीत वालिया	500
21.	श्री सूरज खुल्लर जी	500
22.	श्री के.पी. सिंह जी	5000
23.	श्री रामस्वरूप जी	1000
24.	श्री पंकज रस्तोगी	1100
25.	श्री जगमोहन भण्डारी	500
26.	श्री ज्ञानेन्द्र पाल सिंह	1100
27.	श्री रामगाई दत्त जी	3100
28.	श्रीमती पुष्पा सचदेवा	1500
29.	कुमारी स्वेता नेगी जी	501
30.	श्रीमती सरोज रानी बंसल	1100
31.	श्री रामेश्वर दयाल आर्य	1200
32.	श्रीमती आभा रस्तोगी	4000
33.	श्री हरदीप सागवान	1100
34.	श्री जिले सिंह खोखर	1100
35.	माता ओमवति जी	501
36.	आर्य समाज अशोक विहार, न.दिल्ली	3600
37.	श्री वेद प्रकाश भगतजी	500
38.	श्री सतीश कामरा जी	1100
39.	सत्संग परिवार फरीदाबाद	2200
40.	श्रीमती सुशीला ठक्कर जी	1000
41.	श्री धर्मेन्द्र भोगल	500
42.	श्रीमती द्रौपदी तनेजा	500
43.	श्री सत्यपाल शर्मा	5100
44.	श्री धर्मदेव खुराना	11000
45.	श्री टी.सी. संदुजा	25000
46.	आर्य समाज ब्लॉक–बी जनकपुरी, नई दिल्ली	1000
47.	श्रीमती प्रेमलता पुण्डीर	1001
48.	श्री राजेन्द्र कुमार	2100
49.	श्री दीपक अग्रवाल	6000
50.	श्री रतन सिंह मोकटा	1100
51.	श्रीमती सत्यवंती मनचंदा	1000
52.	श्री पंचीराम जिनाटा	500
53.	श्री आर.के. ठक्कर	1100
54.	आचार्य हुकुम सिंह भारती	1100
55.	श्रीमती सुजाता, मनोज	500
56.	श्री ओमप्रकाश सोनी	500
57.	श्री चन्द्रप्रकाश सोनी	500
58.	श्री आनन्द सोनी	500
59.	श्रीमती सुषमा एवं विजय सचदेवा	20000
60.	माता सत्यवति नांदल	2300
61.	श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा	5000
62.	श्रीमती सुषमा आर्य	2100
63.	श्रीमती चन्द्रकान्ता नरुला	500
64.	श्रीमती निर्मला देवी शर्मा	5000
65.	श्री रामभज मदान	100000
66.	श्रीमती ईश आहुजा	500
67.	श्रीमती संतोष गोयल	500
68.	श्रीमती अरुणा गुप्ता	500
69.	श्री राजेन्द्र सिंह मलिक	500
70.	श्री हरिकिशोर महेन्द्रा	500
71.	श्री रमन कुमार	1100
72.	श्री मदन मोहन चड्‌ढा	500
73.	श्री वीरेन्द्र गोयल	2100
74.	डॉ० बृजपाल सिंह आर्य	500
75.	श्री नरेन्द्र आर्य	500

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून सभी दानदाताओं का धन्यवाद करता है।

पवमान पत्रिका के दिल्ली प्रदेश के वार्षिक ग्राहकों द्वारा देय अवशेष शुल्क

ग्राहक संख्या	नाम	पता	Date of Payment Received	Expiry date	Amount due up to due month-2015
NDY 1	शशि मिढ्ढा	प्लाट नं 64, फलैट नं. 5 गणेश अपार्टमैन्ट, कृष्ण कुंज, गली नं. 2 लक्ष्मीनगर	02.12.2010	Dec-12	350
NDY 2	श्रीमती कृष्णा दहिया	म.नं. ए–2/4, जीवन ज्योति अपार्टमैन्ट	16.10.2011	Oct-12	350
NDY 3	ईश्वर सिंह ढांडा	167, ईश्वर कालोनी भवन, बवाना	02.12.2010	Dec-12	350
NDY 4	रोहित पाहवा	म.नं. 290, गुजरावाला टाउन, पार्ट–3,	14.08.2011	Aug-12	350
NDY 5	आशा रानी	74 आनन्द विहार, पीतमपुरा	14.08.2011	Aug-12	350
NDY 6	जी.पी. गुप्ता,	बी 7 / 1, ए बसन्त विहार,	18.06.2012	Jun-13	250
NDY 8	इन्दु सूद	बी–3 /81 पश्चिम विहार,	18.04.2012	Feb-13	250
NDY 9	वरूण कुमार नागर	म.नं. जे.–1 डी ईस्ट, विनोदर नगर,	12.10.2011	Oct-12	350
NDY 10	मोहन लाल गुटेरजा	एफ– 228, मेन मंगल बाजार रोड, लक्ष्मीनगर	14.10.2011	Oct-12	350
NDY 11	के.के. किनरा	म.नं. 188 डी.डी.ए., एस.एफ.एस., फलैट्स, पॉकेट–1, सेक्टर–9, दवारका	16.10.2011	Oct-12	350
NDY 12	राजेश हाण्डा	म.नं. 92 बी, पॉकेट, बी 3 बी, जनकपुरी,	09.07.2011	Jun-12	350
NDY 14	इन्दर सिंह ढांडा	म.न–1209 हेमकुण्ट चैम्बर, 89–नेहरू प्लेस	1/12/2013	Dec-13	250
NDY 15	निर्मल जेरथ	34 ई कमला नगर	18.05.2012	May-13	250
NDY 16	संजीव आर्य	19/105 वेस्ट मोती बाग, सराय रोहिला,	20.05.2012	Mar-14	300
NDY 17	जय सिंह	म.नं 31 2 टी. बी, प्रयाग निकेतन, ज्वाहरनगर	16.10.2011	Oct-12	350
NDY 18	डॉ ज्ञान प्रकाश गुप्ता	बी – 7/1 ए बसन्त विहार	01.07.2011	Jul-12	350
NDY 20	आर.सी. मल्होत्रा	नार्थ 'ए' ब्लॉक ए– 25 / 1, शास्त्रीनगर, भारतनगर के सामने	11.06.2011	May-12	350
NDY 21	ज्ञानचन्द अरोड़ा	सी–57 सुभद्रा कालोनी, सराय रोहिला,	01.08.2012	May-13	250
NDY 22	पवमान आर्य,	द्वारा श्री हनुमत उपाध्याय, अथर्ववेद, सांगोपांग, वेद विद्यापीठ, आर्ष गुरूकुल, ग्राम टटेसर जोन्ती	05.08.2012	Aug-13	250
NDY 23	देवी दयाल आर्य	म0नं0 116 गली नं0 14 ओंकार नगर बी, त्रिनगर, दिल्ली	15.10.2011	Oct-12	350
NDY 24	रामपाल पांचाल	1 / 3342 रामनगर विस्तार, शाहदरा,	12.06.2012	Jun-13	250
NDY 25	श्री श्याम सुन्दर अरोड़ा	डी 354, अवन्तिका सेक्टर 1, रोहिणी	21.05.2012	May-13	250
NDY 26	राज मिड्ढा	ब्लॉक सी 1, मं0नं0 7576, लाजपतनगर,	02.06.2011	May-12	350
NDY 27	विकास गुप्ता	56 बाग दीवार, फतेहपुरी	12.06.2012	Jun-13	250
NDY 28	उर्मिला सरीन	280 – सी पोकेट – सी मयूर विहार फेज 2	24.04.2012	Mar-13	250
NDY 29	श्रीमती नीलम बत्रा जी	67 हेमकुन्ट कालोनी तृतीय फलोर	27-02-2014	Feb-14	300
NDY 30	विश्व बन्धु	विश्व बन्धु 21 / 3 हरि एन्कलेव पाकेज, जे0डी0, हरिनगर	02.08.2011	Jul-12	350
NDY 31	कान्ता लाल	21 / 3 बी शक्तिनगर,	22.04.2011	May-12	350
NDY 32	टी.आर. शर्मा	ई 201 अनुपम अपार्टमैन्ट, स्टेट अर्जुननगर, शाहदरा	02.08.2011	Jul-13	250
NDY 33	श्रीमती किताबी देवी	म.न 162 गली नं 1 आर्य समाज रोड़ संजय कालोनी	12/9/2013	Sep-14	300
NDY 34	डॉ0 राजेश कुमार	बी–246, लेन नं0–3 मजलिश पार्क, आजादपुर मण्डी			300
NDY 35	एम.एन. डांडा	म.न. 2014, टाइप – 4, गुलाबी बाग,	26.06.2012	Aug-14	300
NDY 36	ईश नारंग	207– दयानन्द विहार	18.04.2010	Apr-12	350
NDY 37	कृष्णा देवी	सी– 3 / 16 प्रथम तल, मियांवाली नगर,	12.07.2011	Jul-12	350
NDY 38	योगेश मल्होत्रा	42 सी/जी एच 10 सुन्दर अपार्टमेन्टस, पश्चिम विहार,	11.06.2011	May-12	350
NDY 41	रमा गुप्ता	सी– 2 ए 176 पाकेट 16, जनकपुरी	18-3-2013	Mar-14	300
NDY 42	राजीव वर्मा	91– डबल स्टोरी, नया राजेन्द्रनगर,	16.10.2011	Oct-12	350
NDY 45	कृष्णा पुरी	जे– 26, लाजपतनगर,	10.02.2011	May-12	350
NDY 46	कैलाश शर्मा	म.नं. 12 फस्ट फ्लोर, पश्चिमी पटेलनगर,	10.01.2012	Dec-12	350
NDY 47	वीरेन्द्र वर्मा	म0नं. मोलडबन्द, बदरपुर,	24.06.2011	Jun-12	350
NDY 48	डॉ के.एल राजपाल	229 निमरी कालोनी चरण 1 अशोक विहार फेज.04	1/11/2012	Nov-13	250
NDY 49	राजकुमार पाहुजा	19– ए, सरोजनीनगर मार्केट	17.04.2011	May-12	350
NDY 52	ओम् प्रकाश	बी–14 कपबींनद एन्कलेव, सामने डी.टी.सी., डिपो, नजफगढ	25.03.2012	Mar-13	250
NDY 53	श्री राधे श्याम चावला	ए 158 दयानन्द कालोनी लाजपथ नगर –4		Jul-12	350
NDY 54	अजय तनेजा	सी– 26, सिंडिकेट एन्कलेव, गली नं. 5 डाबली मोड़,	06.06.2011	May-12	350
NDY 55	श्री देशराज सेठी	सी–64 फस्ट फ्लोर, फ्रन्ट लाइन, राजौरी गार्डन,	31.12.2010	Dec-12	350
NDY 56	कु0 प्रीति पाहवा	आर–35, राजोरी गार्डन,	30.03.2012	Mar-13	250
NDY 57	श्री धनीराम	डी0 जी0 1032 सरोजनी नगर	2/4/2012	Apr-13	250
NDY 60	ओम् प्रकाश	पुत्र श्री हरिमल, म.0नं. 145 गाव असौला, फतेहपुर बेरी	30.07.2012	Jun-13	250
NDY 61	सदानन्द आर्य	एम0एस0 एन0, ऐग्रो सीडज, प्राईवेट लि0, जी–7 लुसा टावर, आजादपुर	22.04.2011	May-12	350
NDY 63	वी0 एस0 दीवान	90 / ई हैप्पी होम सोसाइटी, सेक्टर–7, द्वारका,	08.08.2012	Aug-13	250

NDY 66	सरोजनी मदान	म.नं. ए–4 / 125, कोनार्क अपार्टमेन्ट, कालका जी,	26.03.2011	Mar-12	350
NDY 67	जगदीश चन्द	क्वाटर नं. 821, नई आर.ई.एस. कॉम्पलेक्स, सेन्ट्रल जेल, तिहाड़, जनकपुरी	25.06.2012	Aug-13	250
NDY 68	जनक दुलारी भाटिया	भाटिया क्लॉथ हाउस, सी–173, हरिनगर, घंटाघर,	1/3/2013	Feb-14	300
NDY 69	सावित्री देवी	के 1 / 82 मोहन गार्डन, उत्तमनगर	23.02.2011	May-12	350
NDY 70	रमेश कुमारी, रावल	फ्लैट नं. 205 ए, एम.आई.जी., राजौरी गार्डन	12.06.2012	Jun-13	250
NDY 71	बी.पी. रस्तोगी	फ्लैट नं. 7357, सेक्टर– बी, पॉकेट– 10, बसन्त कुंज,	26.04.2011	May-12	350
NDY 72	दीपा मनोट	19 / 2 राजौरी गार्डन	12.06.2012	Jun-13	250
NDY 73	मीना पुरी	ए 2 / 28 राजौरी गार्डन	12.06.2012	Jun-13	250
NDY 74	संयोगिता राजपूत	14 / 30, सुभाषनगर,	12.06.2012	Jun-13	250
NDY 76	चंचल लुथरा,	317 प्रशान्त विहार,	12.06.2012	Jun-13	250
NDY 77	नीलम लाम्बा	जे–31 राजोरी गार्डन,	12.06.2012	Jun-13	250
NDY 78	राज पाण्डे	जी 16 / 8 राजौरी गार्डन	12.06.2012	May-13	250
NDY 79	दर्शन कत्याल,	नारायणा विहार, एफ 17	12.06.2012	May-13	250
NDY 80	विशाल प्रकाश आर्य	ए 92 विशाल एन्कलेव, राजोरी गार्डन	12.06.2012	May-13	250
NDY 81	जगमहेन्द्र सिंह	इस्टर्न कोर्ट ए.जी.एम(बी.एस.एन.एल) आफिस ग्राउण्ड फ्लोर	18-10-2013	Oct-14	300
NDY 82	दिनेश कुमार	इ–25 हरकैशनगर, ओखला टैंक,	11.07.2012	Aug-13	250
NDY 83	धर्मवीर गुप्ता	रोड नं. 10, म.नं.–7 ईस्ट पंजाबी बाग,	21.08.2012	Aug-13	250
NDY 86	डॉ के डी मलहोत्रा	7 / 149 सुभाष नगर नई दिल्ली .110027 राजोरी गार्डन	15-09-2012	Sep-13	250
NDY 87	किशन चन्द नासा	एफ–142 द्वितीय फ्लोर, सरस्वती विहार, पीतमपुरा,	03.06.2011	May-12	350
NDY 88	श्री कैशाल मारवाहा	सी– 4 जी 92 ए जनकपुरी,	02.10.2012	Apr-13	250
NDY 89	हंस राज	पुत्र श्री लेख राम ग्राम व पोस्ट पण्डवाला कला, नजफगढ़,	02.07.2011	Jun-12	350
NDY 91	श्रीमती मंजूला वाधवा	40 / 219, फस्ट फ्लोर चितरंजन पार्क	13.06.2011	Feb-12	350
NDY 92	श्री सी0 के0 दीवान	सी0 38 न्यू मुल्तानगर	25-6-2012	Jun-13	250
NDY 93	प्रेम प्रकाश आहूजा	ए.सी. 15 बी. दूसरा तल, गंगा राम वाटिका, तिलकनगर,	1/3/2013	Mar-14	300
NDY 94	ज्ञानेश्वर कुमार शास्त्री	आर्य गुरूकुल, तिहाड़, ग्राम तिलकनगर	28.02.2012	Feb-12	350
NDY 97	नारायण सिंह सहरावत	म.न0 1148 / 1 कन्झावला रोड़ मौ0 बेगवान गांव व डाकखाना बवाना	10/11/2012	Nov-13	250
NDY 98	श्री प्रेम प्रकाश	जी.एच–14 / 525 सुन्दर विहार	17-7-2013	Jul-14	300
NDY 99	एम.एल मल्होत्रा	61 सी जी.एच / 10 सुन्दर अपार्टमैन्ट पश्चिम विहार दिल्ली 87	4/1/2013	Jan-14	300
NDY 100	श्री प्रभुदयाल सचदेवा	एस 227 स्कूल ब्लाक शक्करपुर	3/5/2013	May-14	300
NDY 101	श्री जगदीश चन्द्र	क्वाटर न. 821 नयू आर.ई.एस कामपलैक्स सैन्ट्रल जेल जनकपुरी	6/6/2012	Jun-13	250
NDY 102	यशपाल चावला	231 जय अपोर्टमैन्ट सैक्टर9 रोहिणी दिल्ली	17-11-2014	Nov-15	150
NDY 103	श्री करण सिंह	6 / 339 नगर आर्य समाज वेद मंदिर मौल्ला महाराम डूगर शाहदरी	8/2/2013	Feb-14	300
NDY 105	श्री रेखा नागर,	डी 129 ईस्ट विनोदनगर,			300
NDY 109	श्री योगेश मुंजाल	बी–175, ग्रेटर कैलाश–1	2/3/2013	Mar-14	300
NDY 110	श्री करतार सिंह सहरावत	सन आफ / श्री राम सिंह म.न.32 पो.ओ.सिंधु	3/3/2014	Mar-15	350
NDY 111	श्री रामपाल आर्य	म.न.–146 गला न.3 गौतम कालोनी	3/3/2013	Mar-14	150
NDY 112	श्री आर.सी. मल्होत्रा	नार्थ'ए' ब्लॉक ए–25 / 1,शास्त्रीनगर, भारतनगर केसामने			300
NDY 113	श्री ओम पकाश हंस	ब्लाक बी–12 ग्राउण्ड फलोर राजा गार्डन नई दिल्ली	12/10/2014	Oct-15	150
NDY 114	श्री राम अवतार शर्मा	म.न. जे–102 ए विष्णु गार्डन	12/10/2014	Oct-15	150
NDY 115	श्रीमती अंजु घई	10 / 17 शक्ति नगर	5/4/2013	Apr-14	300
NDY 116	श्रीमती प्रतिभा भरद्वाज	42 बी पाकेट बी. एस.एफ 5 मयूर विहार फेज 3 दिल्ली	20-4-2013	Apr-14	300
NDY 117	श्री कमल गुप्ता	टी 356 मेन रोड गौतम पुरी निकट पानी की टंकी न्यू सीलमपुर	3/5/2013	May-14	300
NDY 119	श्रीमती सोनिया ग्रोवर	म.न–6 / 280 तृतीय फलोर गीता कालोनी	28-7-2013	Jul-14	300
NDY 120	जय प्रकाश भाटिया	डी.ए 3–एफ (डी.डी.ए) फलैटस हरिनगर	19-8-2013	Aug-14	300
NDY 121	श्री यशवीर सिंह	ए–105 श्याम विहार फेज–1 नजदीक मैक्स ड्राईक्लीनर कृष्णा मार्किट गोयला रोड नफजगढ	14-9-2013	Sep-14	300
NDY 122	श्रीमती गुलशन भाटिया	d/o श्री बी.डी भाटिया, भाटिया क्लाथ हाऊस सी–73 क्लाक टावर	22-10-2013	Oct-14	300
NDY 123	श्री राम विलास गोयल	बी–21	23-10-2013	Oct-14	300
NDY 124	सुरेन्द्र बुद्धि राजा	एफ–75	26-10-2013	Oct-15	300
NDY 125	श्रीमती सरला देवी	w/o स्वं राजपाल डागी गांव एवं पो शाहबाद	22-12-2013	Dec-14	300
NDY 126	श्री महेन्द्र सिंह सेजवाल	एच–42 रघुनगर पंखा रोड	22-12-2013	Dec-14	300
NDY 127	श्री रतन आर्य सुपुत्र श्री	हरि सिंह आर्य म.न–311 गली न–7 राजनगर–2 पालम कालोनी	22-12-2013	Dec-14	300
NDY 156	इन्दर सिंह	69 सूरज नगर आजाद पुर	5/1/2013	Jan-15	150

यदि आपने पवमान का उपरोक्त शुल्क जमा कर दिया है तो उसकी रसीद संख्या एवं तिथि तथा धनराशि आदि की सूचना आश्रम में कार्यरत श्री रमाकान्त कौशिक, दूरभाष : 8171619653 पर दे दें।

Saturn Series

CPU Holder

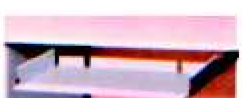

Slide out Keyboard tray

Swivel and Tiltable keyboard tray

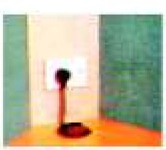

Wire Management

All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary: Any infringement is liable for prosecution.

DE BONO FLEXCOM (INDIA) LTD.: Kukreja House, 1st Floor, 46, Rani Jhanshi Road, New Delhi-110055
Ph : 011-23540721. 23533936 **Fax :** 23533944 **Email :** debono@debonoindia.com

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2015-17 समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

MUNJAL SHOWA मुंजाल शोवा

मुंजाल शोवा लिमिटेड देश में टू व्हीलर / फोर व्हीलर उद्योग में सभी प्रमुख ओ.ई.एम. के लिए शॉक एब्जोर्बर, फ्रंट फोर्क्स, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कंवेंशनल) और गैस स्प्रिंगो का सबसे बड़ा निर्माता है। निर्मित उत्पाद, गुणवत्ता और सुरक्षा के कड़े मानों के अनुरूप होते हैं। कम्पनी के उत्पाद बाधामुक्त, आरामदेह, चिरस्थायी, विश्वसनीय और सुरक्षित यात्रा के लिए जाने जाते हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, टीएस–16949, आईएसओ 14001, ओ.एच.एस.ए.एस. 18001 और टीपीएम प्रमाणित कम्पनी है। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

टीपीएम प्रमाणित कम्पनी

आईएसओ / टीएस–16949–2002 प्रमाणित

आईएसओ–14001 एवं ओएचएसएएस–18001 प्रमाणित

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

- हीरो मोटोकोर्प लिमिटेड
- मारुती सुजुकी इन्डिया लिमिटेड
- होन्डा कार्स इन्डिया लिमिटेड
- होन्डा मोटर साइकल एवं स्कूटर इन्डिया (प्र0) लिमिटेड
- इन्डिया यामहा मोटर (प्र0) लिमिटेड

हमारा उत्पादन

- स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्कस
- गैस स्प्रिंगस / विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं0 9–11, मारुति इन्डस्ट्रीअल एरिया, गुड़गाँव। दूरभाषः 0124–2341001, 4783000, 4783100
प्लॉट नं0 26 इ एवं एफ, सेक्टर–3, मानेसर, गुड़गाँव। दूरभाषः 0124–4783000, 4783100
प्लॉट नं0 1, इन्डस्ट्रीअल पार्क–2, सालेमपुर गाँव, मेहदूद–हरिद्वार, उत्तराखण्ड दूरभाषः 0124–4783000, 4783100

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित। संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री